Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साई लीला

* Year 21 * Issue 2 * March-April 2021 * 15/-

* वर्ष २१ * अंक २ * मार्च-अप्रैल २०२१ * १५/-

Hanuman Mandir - Shirdi

On the occasion of GUDHI PADWA

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

Hon'ble Members of Ad-hoc Committee

Sri Srikant Anekar (Chairman)
Principal District & Sessions Judge, Ahmednagar

Sri Kanhuraj Bagate (I.A.S.)
Chief Executive Officer

Sri Bhanudas Palave
Additional Revenue Divisional Commissioner, Nashik

Smt. Geeta Pravin Bankar
Asstt. Charity Commissioner, Ahmednagar

Internet Edition - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साईं लीला

वर्ष २१ अंक २

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी

कार्यकारी सम्पादक : भगवान दातार

SHRI SAI LEELA

Year 21 Issue 2

Editor : Chief Executive Officer

Executive Editor : Bhagwan Datar

अंतरंग

- प्रणिपात : डॉ. सुबोध अग्रवाल ४
- ●●● और मैं चल पड़ा साईं की राह पर : सुरेश चन्द्र ११
- शान्तिदं, मुक्तिदं, कामदं, कारणं – साईंनाथ : विनय घासवाला १४
- साईंनाथ तेरे हज़ारों हाथ... : श्रीमती अरुणा वि. नायक १६
- Shirdi News 25

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting:** Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office :** 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office :** At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription: Rs.125/-** ● **Subscription for Life : Rs. 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : Rs.1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue: Rs. 15/-** ● **Shri Sai *Punyatithi* Annual Special Issue : Rs. 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Ganesh Art Printers, MR Trade Centre, Shop No. 7, Wadiya Park, Ahmednagar - 414 001 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

प्रणिपात

द्वारकामाई में साईं–चरण,
नानासाहेब हर रोज़ दबाते थे।
गीता–श्लोक भी उसी समय,
धीमे स्वर में गुनगुन गाते थे।
बाबा ने पूछा, तो नाना ने श्लोक का
'संकुल भावार्थ' बताया था।
चाँदोरकर को तब देवा ने,
उसका यथार्थ अर्थ समझाया था।।
मस्जिद में स्वयं साईं ने नाना को,
अर्जुन–सम ज्ञान सिखाया था।
बन कुरुक्षेत्र का दिव्य कृष्ण,
दीप्तियुक्त जीवन–दर्शन दर्शाया था।।

हे साईं! आज दीर्घकाल के उपरान्त आपसे आपकी द्वारकामाई मस्जिद में प्रवेश की अनुमति पाकर मैं धन्य हो गया हूँ। हाँ, देवा! आपकी यह वही पावन द्वारकामाई मस्जिद है जहाँ बैठ कर बरसों पहले आपके एक अनन्य भक्त नानासाहेब चाँदोरकर नित्य प्रति आपकी चरण–सेवा किया करते थे। **श्री साईं सत् चरित, अध्याय ३९**

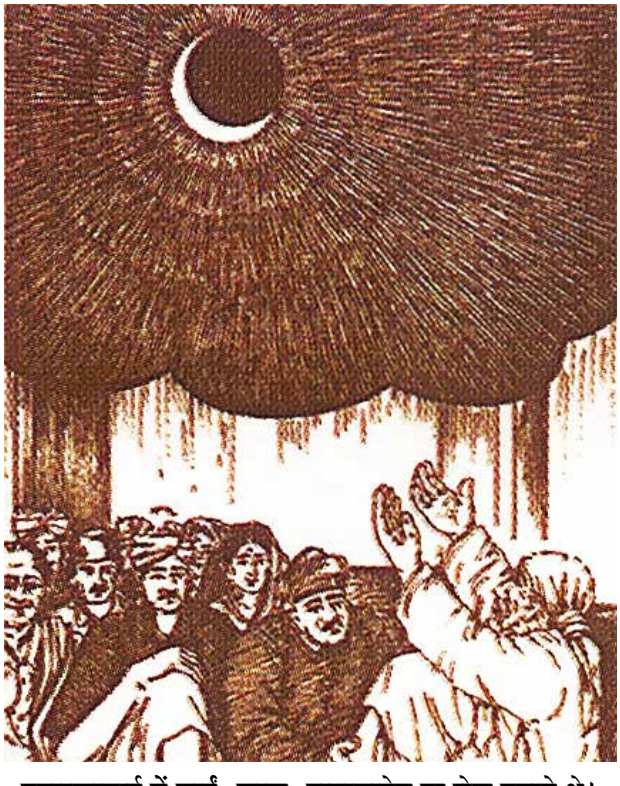

द्वारकामाई में साईं–चरण, नानासाहेब हर रोज़ दबाते थे।

एक दिन की बात है कि वे चरण–सेवा करते समय

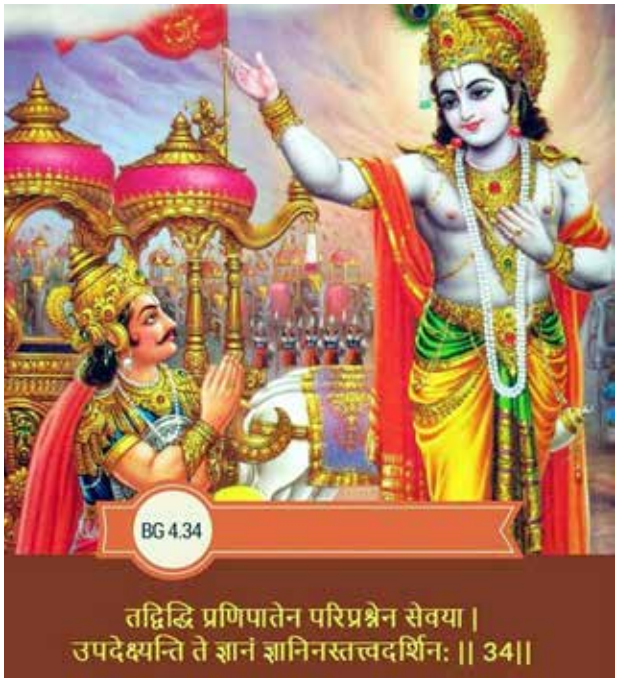

श्रीमद् भगवद् गीता का निम्न श्लोक गुनगुनाने लगे–

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।
(४:३४)

हे मेरे जीवनाधार साईं! आपने यह श्लोक सुन कर चाँदोरकर से इसका अर्थ बताने के लिए कहा। चाँदोरकर ने इसका अर्थ इस प्रकार बताया –

नानासाहेब चाँदोरकर

''तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों को भली प्रकार दंडवत प्रणाम (साष्टांग नमस्कार) कर, सेवा और निष्कपट भाव से किये गए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जान! वे ज्ञानी, जिन्हें सद्वस्तु

(ब्रह्म) की प्राप्ति हो चुकी है, तुझे ज्ञान का उपदेश देंगे।''

यद्यपि नानासाहेब चाँदोरकर वेदांत के विद्वान विद्यार्थियों में से एक थे, और उन्होंने अनेक टीकाओं के साथ **श्रीमद् भगवद्गीता** का भी गहन अध्ययन किया था, मगर हे बाबा! आपने नानासाहेब को चेताया कि आप इस प्रकार का संकुल भावार्थ नहीं चाहते। आपने चाँदोरकर से उक्त श्लोक के प्रत्येक शब्द और उसका भाषांतरित उच्चारण करते हुए व्याकरणसम्मत अर्थ समझाने के लिए कहा।

हे तत्त्वदर्शी साईं! अब नाना ने एक-एक शब्द का अर्थ बोलना प्रारम्भ किया। सबसे पहले 'प्रणिपात' शब्द को परिभाषित कर आपको संतुष्ट करने का प्रयास किया। चाँदोरकर ने कहा कि 'प्रणिपात' का अर्थ है – दंडवत प्रणाम अर्थात् साष्टांग नमस्कार। यह सुन कर आपने नाना से प्रश्न किया कि क्या ब्रह्म के तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों को मात्र दंडवत प्रणाम अर्थात् साष्टांग नमस्कार करना ही पर्याप्त है? अब नाना ने स्वीकार किया कि वे दंडवत प्रणाम अर्थात् साष्टांग नमस्कार के अतिरिक्त 'प्रणिपात' के किसी दूसरे अर्थ से सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

हे ज्ञानावतार साईं! नाना की इस स्वीकारोक्ति से

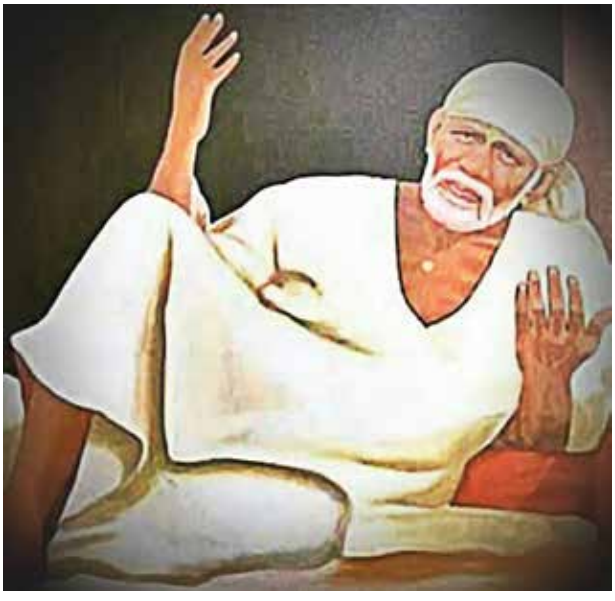

देखो नाना! ज्ञानियों को केवल साष्टांग नमस्कार करना पर्याप्त नहीं है।

प्रसन्न होकर आपने यों समझाना प्रारम्भ किया –

देखो, नाना! ज्ञानियों को केवल साष्टांग नमस्कार करना पर्याप्त नहीं है। 'प्रणिपात' का अर्थ है 'शरणागति'। हमें सद्गुरु के चरणाम्बुजों में प्रीति रखते हुए उनके प्रति अनन्य भाव से शरणागत होना चाहिए। शरणागत होना चाहिए – तन, मन और धन से।

हे साईं! आपके श्रीमुख से 'प्रणिपात' की उपरोक्त वास्तविक व्याख्या सुन कर मुझे महाराजा जनक की कथा का स्मरण हो आ रहा है, जो निम्न प्रकार है –

एक बार की बात है – राजा जनक ने अपने राज्य में मुनादी करा दी कि वे ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। यदि राज्य में कोई भी मंत्रदृष्टा ऋषि, उपदेष्टा आचार्य, पंडित, योगी, महर्षि अथवा साधु-संत हो, तो आकर उन्हें ब्रह्म-दर्शन कराने की अनुकम्पा करें। राजा ने साथ ही यह शर्त भी रख दी कि ब्रह्म-दर्शन मात्र कुछ क्षणों में कराना होगा; और इन क्षणों की व्याख्या इस प्रकार की गई कि जब राजन् अपने घोड़े पर चढ़ने की प्रक्रिया में होंगे, मगर घोड़े पर ठीक तरह से स्थिर होकर बैठ भी न पाये होंगे – इसी मध्य ब्रह्म-दर्शन हो जाना चाहिए। इस तरह ब्रह्मज्ञान करा देने के लिए आया कोई आचार्य यदि अपने प्रयास में असफल हो जाता है, तो राजा जनक भविष्य में उसका मुँह देखना पसंद नहीं करेंगे। महाराज

हे देवा! यह दैवयोग ही था कि महर्षि अष्टावक्र जी उधर से गुज़र रहे थे।

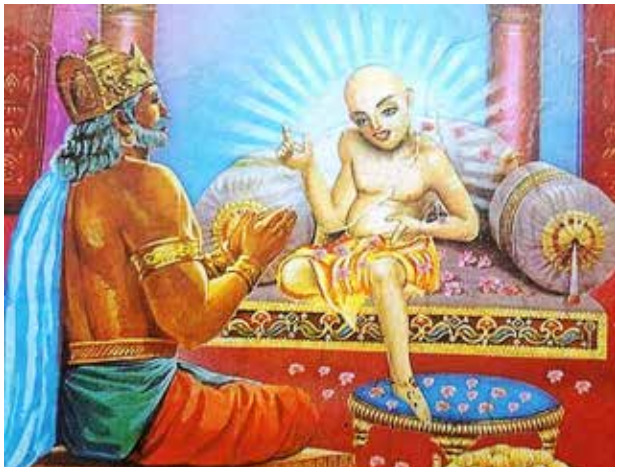

हे साईं! राजा जनक ने हामी भर दी।

की इस कड़ी शर्त को सुन कर उच्च कोटि तक के समस्त विद्वान भयभीत हो गये और उन्होंने इस अग्नि–परीक्षा से न गुज़रना ही उचित समझा।

हे देवा! यह दैवयोग ही था कि महर्षि अष्टावक्र जी उधर से गुज़र रहे थे। उन्होंने विद्वानों से उनके भयभीत होने का कारण पूछा। कारण सुन कर अष्टावक्र जी को हँसी आ गई। वे सीधे महाराजा जनक के दरबार में पहुँचे। विदेहराज को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''हे राजन्! मैं आपको ब्रह्म–दर्शन कराने के लिए तैयार हूँ। मगर, ब्रह्म–दर्शन इतनी सहजता से कर पाना सम्भव नहीं है। आपका राजमहल रज और तम गुणों से दूषित है। हमें ऐसे स्थान पर चल कर जाना होगा, जहाँ का वातावरण शुद्ध सत्त्व की सुगंध से महक रहा हो।'' हे साईं! राजा जनक ने हामी भर दी और दोनों ही राजमहल से निकल कर उस पथ पर चल पड़े, जो सघन वन की ओर जा रहा था। यद्यपि यह परम्परा थी कि महाराज जब भी राजमहल की चारदीवारी से बाहर जाते, शस्त्रों से सुसज्जित शाही सेना भी पीछे–पीछे हो जाती। मगर, राजा ने सेना को साथ न आने के लिए कहते हुए जंगल से बाहर रह कर ही लौटने की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया।

हे बाबा! जंगल में प्रवेश करते ही तत्त्वदर्शी अष्टावक्र जी ने राजा जनक से स्पष्ट शब्दों में कहा, ''हे राजन्! मैं आपको ब्रह्म–दर्शन तभी कराऊँगा, जब आप मेरी शर्त मानने के लिए तैयार हो जायेंगे। यद्यपि मैं आपके समक्ष एक तुच्छ मानव हूँ और आप मिथिला नरेश हैं, फिर भी इस समय मुझमें और आपमें गुरु–शिष्य का सम्बन्ध है। आदिकाल से यह परम्परा रही है कि दक्षिणा पाकर ही

''हे गुरुवर! मुझे ब्रह्म–दर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए मैं आपको आपकी मुँहमाँगी दक्षिणा देने के लिए तैयार हूँ!''

गुरु अपने शिष्य को ज्ञान के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराता है। यदि आप मुझे दक्षिणा देने के लिए सहमत हैं, तब मैं आपको अवश्य ही ब्रह्म–दर्शन करा दूँगा।'' राजा जनक ने निःसंकोच उत्तर दिया, ''हे गुरुवर! मुझे ब्रह्म–दर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए मैं आपको आपकी मुँहमाँगी दक्षिणा देने के लिए तैयार हूँ!'' अष्टावक्र जी अत्यन्त हर्षित हो बोले, ''हे विदेहराज, मुझे दंडवत प्रणाम करते हुए तन, मन और धन से अनन्य भाव में लीन हो मेरे शरणागत हो जाओ! यही मेरे द्वारा इच्छित दक्षिणा होगी।'' राजा जनक ने अविलम्ब अपना सम्पूर्ण राजपाट अष्टावक्र जी को सौंप देने का संकल्प लेते हुए कहा, ''ठीक है! मैं आपके चरणाम्बुजों में प्रीति रखते हुए अत्यन्त श्रद्धापूर्वक अपना तन, मन और धन आपको दक्षिणा–स्वरूप भेंट करता हूँ। इसी समय से अपने तन, मन और धन पर मेरा कोई अधिकार नहीं रह गया है। मेरा सर्वस्व अब आपका हो गया है।''

हे सद्गुरु साईं! अब राजा जनक के गुरु ने उन्हें घोड़े से उतर कर जंगल से गुज़रने वाली सड़क पर बैठ जाने का आदेश दिया। जनक तो सड़क पर बैठ गये, मगर

प्रधानमंत्री एवं अन्य जनों के सम्बोधन पर आँखें बंद किये बैठे राजा ने कोई ध्यान न दिया।

अष्टावक्र जी घने जंगल में जाकर एक वृक्ष के नीचे बैठ कर ध्यानमग्न हो गये। इसी तरह अनेकों दिन बीत गये। जंगल के बाहर खड़ी शाही सेना राजा जनक के लौटने की प्रतीक्षा करती रही। गुरु और शिष्य दोनों में से कोई भी तो नहीं लौटा। अन्ततः सेना ने जंगल में प्रवेश कर ही दिया... और शीघ्र पाया कि राजा जनक सड़क के बीचों-बीच आँखें बंद किये बैठे हैं। वे हिल-डुल भी नहीं रहे हैं। तब सैनिकों को लगा कि अवश्य ही अष्टावक्र जी ने राजा पर कुछ जादू कर दिया है। इसी कारण राजा अचेतन अवस्था को प्राप्त हो गये हैं। अष्टावक्र जी को वहाँ न पाकर सैनिकों का संदेह विश्वास में बदल गया। वे दौड़े-दौड़े राजमहल गये और शीघ्र ही प्रधानमंत्री को बुला लाये। आते ही प्रधानमंत्री ने अत्यन्त अधीरता से आवाज़ लगाई.... ''हे राजन्! हे राजन्!! हे राजन्!!!'' मगर, न तो राजा ने आँखें ही खोलीं, और न ही हिले-डुले। अब प्रधानमंत्री ने भयभीत होकर महारानी से जंगल में आने के लिए विनती की। महारानी ने आते ही यों पुकार लगाई... ''हे स्वामिन्! हे स्वामिन्!! हे स्वामिन्!!!'' राजा की स्थिति में कोई परिवर्तन न आया; वे अभी भी आँखें बंद किये निर्जीव अवस्था में यथावत् बैठे रहे।

हे साईं! इसी बीच शाही सेना अष्टावक्र जी को खोजती उसी स्थान पर आ गई, जहाँ वे वृक्ष के तले बैठे थे। सैनिक उन्हें पकड़ कर राजा के पास ले आये। आते ही अष्टावक्र जी ने राजा को आदेश दिया, ''हे राजन्, तुम्हें लेने के लिए महारानी, प्रधानमंत्री, अन्य सभासद और सैनिक आये हुए हैं। तुम उनकी आवाज़ पर क्यों नहीं उठ खड़े हुए! अब तुम अपनी आँखें खोलो और उठ जाओ!''

महारानी ने आते ही यों आवाज़ लगाई, ''हे स्वामिन्!...'' मगर, राजा की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया।

राजा जनक ने तुरन्त ही आँखें खोल दीं और अष्टावक्र जी को साष्टांग प्रणाम करते हुए कहा, ''स्वामी!'' अष्टावक्र जी ने प्रश्न किया, ''हे राजन्! तुमने महारानी, प्रधानमंत्री और अन्य सभी के सम्बोधनों का उत्तर क्यों नहीं दिया?'' राजा जनक ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक ये प्रतिवचन कहे, ''हे गुरुवर! कर्म और वचन का सीधा सम्बन्ध तन, मन और धन से है और जब मैंने अपना तन, मन और धन

अष्टावक्र जी के आवाज़ लगाने पर राजा जनक ने तुरन्त आँखें खोल दीं और उठ खड़े हुए।

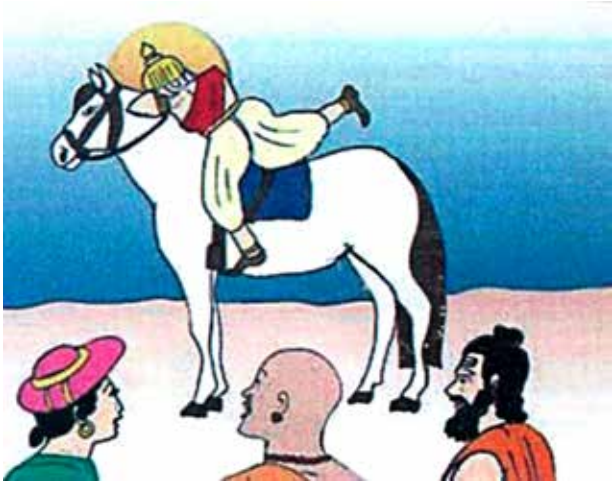

हे साईं! विदेहराज ने जैसे ही अपना एक पाँव रकाब पर रख कर दूसरा पाँव...

आपको दक्षिणा–स्वरूप भेंट कर दिया था, तब उन पर मेरा अधिकार नहीं रह गया था। यह तन, मन और धन तो अब मात्र आपकी वाणी द्वारा निकलने वाले आदेश का अनुपालन करने योग्य रह गया है।''

हे बाबा! अब अष्टावक्र जी ने गद्गद होकर कहा, ''हे राजन्! अब आप ब्रह्म–दर्शन करने के लिए सुयोग्य पात्र बन गये हैं।'' पास ही में खड़े शाही घोड़े की ओर इशारा करते हुए अष्टावक्र जी ने राजा जनक से निवेदन किया, ''हे राजन्, अब आप घोड़े की पीठ की एक ओर लटकी रकाब पर पैर रखिए।'' हे साईं! विदेहराज ने जैसे ही अपना एक पाँव रकाब पर रख कर दूसरा पाँव घोड़े की पीठ पर फैलाते हुए दूसरी ओर की रकाब पर रखा भी न था कि उन्हें ब्रह्म–दर्शन हो गया –

बोले थे शिर्डीश्वर नाना से,
यह तो 'प्रणिपात' नहीं कहलायेगा
मात्र साष्टांग नमस्कार से क्या कभी किसी को,
ब्रह्मज्ञान मिल पायेगा।
केवल दंडवत प्रणाम से नहीं कदापि,
बहमज्ञान उपलब्ध हो पाता है
अपितु, तन–मन–धन अर्पण कर ही,
मनुष्य सचमुच में ब्रह्मज्ञानी बन पाता है।
सम्पूर्ण समर्पण से जनक,
जंगल अष्टावक्र जी के जब साथ गये
खरे उतर गुरु–परीक्षा में,
क्षण भर में ब्रह्मज्ञान विदेहराज तब पा गये।

हे साईं! एक दिन की बात है कि चहुँ दिशाओं में गूँजती आपकी कीर्ति का स्वर उस धनाढ्य के कानों में भी पड़ा...

हे बाबा! जनक–कथा के विपरीत एक अन्य निम्न घटना आपके द्वारा प्रतिपादित 'प्रणिपात' शब्द की स्पष्ट व्याख्या एवं पुष्टि करती है।

मैं **श्री साईं सत् चरित** के **अध्याय १६–१७** में वर्णित दृश्य देख रहा हूँ। एक बार की बात है – एक अत्यन्त धनाढ्य व्यक्ति ने इसी आपकी द्वारकामाई–मस्जिद में प्रवेश करते ही आपको दंडवत प्रणाम (साष्टांग नमस्कार) किया था। वह धनी अपने जीवन में सब प्रकार से सम्पन्न था। उसकी अतुल सम्पत्ति के तो कहने ही क्या! क्या नहीं था उसके पास! घोड़े इतने कि गिनती ही नहीं हो सकती थी। उसकी भूमि को नापने का सामर्थ्य किसमें! असंख्य दास और दासियाँ! सभी को तो सेठ जी की सेवा करने का अवसर मिल भी नहीं पाता था।

हे साईं! एक दिन की बात है कि चहुँ दिशाओं में गूँजती आपकी कीर्ति का स्वर उस धनाढ्य के कानों में भी पड़ा और उसके हृदय में एक अभिलाषा जाग्रत हो उठी। उसने अपने एक मित्र के सम्मुख अपनी यह चाह यों व्यक्त की – ''मेरे लिए अब किसी वस्तु की इच्छा शेष नहीं

रह गई। शेष रह गई है तो मात्र यह मुराद कि शिर्डी जाकर श्री साईं बाबा से ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लूँ। यदि मुझे अपने ध्येय में सफलता प्राप्त हो गई, तो मैं विश्व का सर्वाधिक सुखी व्यक्ति हो जाऊँगा।''

हे बाबा! उसका मित्र ज्ञानी था और उसे ज्ञात था कि ब्रह्मज्ञान विश्व की अति श्रेष्ठ वस्तु है, जिसकी प्राप्ति सहज नहीं है। वह उस धनाढ्य के चरित्र एवं व्यवहार से भली–भाँति परिचित था। उसे इस तथ्य का भी ज्ञान था कि वह धनी मोहग्रस्त है और सदैव अपनी स्त्री, सन्तान और द्रव्योपार्जन में ही लिप्त रहता है। अतः उसने परामर्श युक्त शब्दों में कहा, ''तुम्हारी ब्रह्मज्ञान की आकांक्षा की पूर्ति सम्भव नहीं होगी; क्योंकि तुमने तो भूल कर भी कभी एक फूटी कौड़ी तक का भी दान नहीं दिया।''

हे शिर्डीश्वर! अपने मित्र की सलाह को अनसुनी कर वह धनी शिर्डी के लिए रवाना हो गया।

हे बाबा! यह निर्विवाद सत्य है कि शिर्डी एक महान तीर्थ–स्थल है, जहाँ भक्तगण हज़ारों कि.मी. की यात्रा तय करके आपके दर्शनार्थ आते हैं और तनिक भी थकावट का अनुभव नहीं करते। आपके दर्शन करते ही भक्त की प्रसन्नता का पारावार नहीं रहता। उसका शरीर उल्लसित हो जाता है। क्षुधा और तृषा की सुधि जाती रहती है। जिस क्षण से उसे आपके भवविनाशक चरणों का स्पर्श होता है, उसके जीवन में एक नूतन आनंद प्रवाहित होने लगता है। भक्त सदैव के लिए आपका ऋणी हो जाता है। शिर्डी पहुँच कर भक्त का मन करता है कि सदैव के लिए वहीं बसेरा बना लें।

मस्जिद में प्रवेश करते ही वह धनी आपके श्री–चरणों पर गिरा तो अवश्य, मगर कितनी थकान हो रही थी उसे, कितने कष्ट का अनुभव कर रहा था वह बेचारा – शिर्डी यात्रा के कारण।

हाँ बाबा, हाँ! शिर्डी यात्रा की एक विशेषता यह है कि वहाँ पहुँच कर आपकी आज्ञा के बिना कोई भी शिर्डी से प्रस्थान नहीं करता। मगर यहाँ सबसे विस्मयकारी बात तो यह थी कि वह ब्रह्मज्ञान पिपासु अपने लौटने का कार्यक्रम पहले से ही बना कर लाया था। जिस ताँगे में बैठ कर वह शिर्डी आया था, वही ताँगा मस्जिद के बाहर अभी भी खड़ा था उसे शीघ्रातिशीघ्र वापस उसके घर ले जाने के लिए। लगता था, जितना भी हो सके कम से कम समय के लिए ही वह शिर्डी में रुकना चाहता था; क्योंकि उसका मन तो अपनी पत्नी, सन्तान और सम्पत्ति में केंद्रित था। आपसे ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् दूसरा ताँगा ढूँढने तक में व्यर्थ ही समय गँवाना नहीं चाहता था वह!

हे साईं! मस्जिद में प्रवेश करते ही उसने कितनी हाय–तौबा मचा दी थी – ''बाबा... बाबा... बाबा... आप यहाँ आने वाले समस्त लोगों को अल्प समय में ही

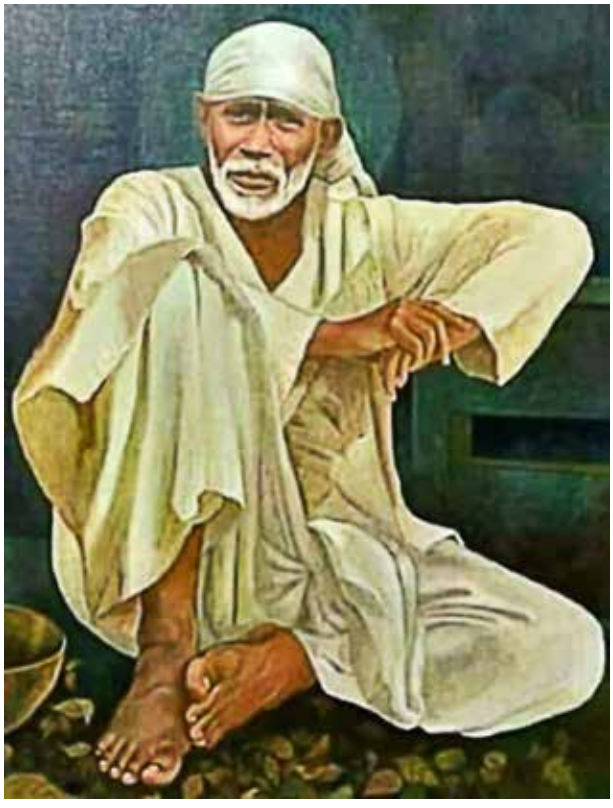

ब्रह्म–दर्शन करा देते हैं। केवल यही सुन कर मैं बहुत दूर से इतना मार्ग चल कर आया हूँ। मैं इस यात्रा से अधिक थक गया हूँ। यदि कहीं मुझे ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो जायें, तो मैं यह कष्ट उठाना अधिक सफल और सार्थक समझूँगा।

ब्रह्म–दर्शन के इस आकांक्षी की प्रार्थना सुन कर, हे ब्रह्माण्डनायक! आपके मुखमण्डल पर रक्तिम आभा जगमगाने लगी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो अरुणोदय के समय बाल–रवि क्षितिज पर उदित हो रहा हो! आपको लग रहा था कि वह क्षण आपके लिए बहुत धन्य और शुभ है; क्योंकि भौतिक पदार्थों की अभिलाषा से आपके पास आने वाले लोगों का कदापि कोई अभाव

न था; परन्तु आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के आगमन का क्षण तो बहुत ही दुर्लभ होता। आपको लगा कि वह आगन्तुक तो निःसंदेह विरला ही है, जो आपसे ब्रह्मज्ञान देने के लिए ज़ोर दे रहा है।

अतः आपने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, ''मेरे प्रिय मित्र! इतने अधीर न होओ। मैं तुम्हें शीघ्र ही ब्रह्म–दर्शन करा दूँगा।''

हे बाबा! निःसंदेह आपका आध्यात्मिक भण्डार भरपूर है, और आप अपने प्रत्येक भक्त को उसकी इच्छानुसार इस ख़ज़ाने में से गाड़ी भर कर बहुमूल्य रत्न ले जाने की बड़ी सहजता से अनुमति प्रदान कर देते हैं। आवश्यकता है तो बस इस बात की कि पात्र योग्यता–प्रमाण की कसौटी पर खरा उतरे।

हे साईं! आपकी पद्धति अद्वितीय और अपूर्व है। आपने उस धनाढ्य की योग्यता को परखने के लिए एक सजीव अभिनय किया। आपने अपने पास खड़े एक बालक को आवाज़ लगाई और पड़ोस में ही अपने एक भक्त के घर भेज कर वहाँ से पाँच रुपये लाने के लिए कहा। बालक खाली हाथ लौट आया; क्योंकि आपका भक्त अपने घर पर नहीं था। आपके द्वारा अब उसी बालक को क्रमशः दूसरे और तीसरे भक्त के घर भेजा गया। मगर, सभी के घर पर ताला लगा था।

हे साईं! अभी आपके इस नाटक का समापन हो भी नहीं पाया था कि इस धनाढ्य की प्रतीक्षा का धैर्य–बाँध टूटने लगा और उसने अत्यन्त अधीर हो आपसे अविलम्ब ब्रह्म–दर्शन करा देने की अपनी प्रार्थना दोहराई।

ब्रह्मज्ञान हेतु लालायित इस धनी व्यक्ति की ली गई परीक्षा का परीक्षा–फल आपने उसके सम्मुख यों घोषित किया...

''सेठ जी! ब्रह्मज्ञान, जो विश्व की अति श्रेष्ठ वस्तु है, उसकी प्राप्ति के लिए तुम मेरे पास आये हो। यदि तुम सचमुच मुझे अपना गुरु मान कर अपना तन, मन और धन मुझे दक्षिणा–स्वरूप भेंट में दे देते, तो तुम्हारी अभिलाषा की पूर्ति में तनिक भी विलम्ब न होता। तन और मन देने की बात तो दूर! तुम तो पाँच रुपये भी न दे सके। तुमने तो अपने तन, मन और धन का केवल सन्तान और ऐश्वर्य के सम्मुख समर्पण कर दिया है।''

हाँ बाबा, हाँ! आपका मूल्यांकन नितान्त सटीक था –

धन–धान्य–समृद्धि,
उस दौलतमंद पे ये सब कुछ था।
था दान–पुण्य से दूर मगर,
फिर भी ब्रह्मज्ञान का इच्छुक था।।
मित्र ने समझाया था,
तुमसे लोभी को ब्रह्म–दर्शन पाना अति दुर्लभ है।
धनाढ्य ने सोचा, साईं को बस प्रणिपात कर
इसका अर्जन अटूट सुलभ है।।
नाटक रच बाबा ने उसका इम्तिहान लिया,
पर वो खरा उतर नहीं पाया था।
तब शिर्डीश्वर ने कृपण धनिक को,
यों ही घर बैरंग वापस लौटाया था।।
तब पर भी उसको घर जाते–जाते,
कृपालु ईश ने उपदेश दिया था।
ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के उस आकांक्षी को,
पात्रता का सार संक्षेप किया था।।

हे वैराग्य की प्रत्यक्ष मूर्ति और अनन्य शरणागत भक्तों के आश्रयदाता साईं! मैं तन, मन और धन आपको अर्पण करते हुए प्रणिपात करता हूँ। स्वीकार कीजिए!

– डॉ. सुबोध अग्रवाल
'शिर्डी साईं धाम',
२९, तिलक रोड, देहरादून – २४८ ००१, उत्तराखण्ड.
संचार ध्वनि : (०)९८९७२०२८१०
ई–मेल : subodhagarwal27@gmail.com

●●● और मैं चल पड़ा साईं की राह पर

श्री साईं बाबा ने अहंकार से सदैव दूर रह कर मानव को सच्ची राह दिखाई। वे कभी भी वाद-विवाद और मतभेद में नहीं पड़ते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि जब तक मनुष्य के हृदय से काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार नष्ट नहीं हो जाते, तब तक ज्ञान व आत्मानुभूति सम्भव नहीं है। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु व विवाद की जड़ है। व्यक्ति जब यह अनुभव करने लगता है कि वह किसी गुण-विशेष या अन्य किसी कार्य विशेष में दूसरे से आगे है तथा उसके समान अन्य कोई नहीं है, तब वह अहंकार का शिकार हो जाता है। अहंकार से बुद्धि भ्रमित होती है और ज्ञान शक्ति भी नष्ट हो जाती है। अहंकार से व्यक्ति के जीवन में अनेक बुराइयाँ आ जाती हैं और वह दूसरों को तुच्छ समझ कर उनसे नफ़रत करने लगता है, जिसकी वजह से उसका यश घटते जाता है।

अहंकार हमेशा पतन का मुख्य कारण होता है, एवं अहंकारी व्यक्ति सदैव अशांत, असंतुष्ट और दुखी रहता है। व्यक्ति यदि यह देखें कि उसके समान व उससे अधिक गुणी, वैभवशाली, विद्वान, शक्तिमान व धनी अनेक व्यक्ति समाज में हैं, तो उसके अहंकार में कमी आयेगी और उसका यश भी बढ़ते जायेगा। वास्तविकता यह है कि यदि अहंकार को खत्म कर दिया जाये, तो विवाद स्वतः समाप्त हो जाता है। इसलिए अहंकार का त्याग सदैव हितकर होता है। कर्म, विद्या, शील और उत्तम जीवन से मनुष्य पवित्र होते हैं, न कि गोत्र एवं धन से। मनुष्य को सत्य स्वरूप को प्राप्त करने के लिए अहंकार को सद्गुरु के श्री-चरणों में अर्पित करना चाहिए।

श्री साईं बाबा को संस्कृत सहित अनेक भाषाओं का पूरा ज्ञान था, और वेद-पुराण, कुरान सहित अन्य धार्मिक ग्रन्थ उन्हें पूरी तरह कंठस्थ थे। उन्होंने ब्रह्म होते हुए भी भिक्षुक के रूप में अपना जीवन बिता कर मनुष्य को अपना अहंकार छोड़ने की अद्वितीय शिक्षा दी तथा विश्व में रह कर उसे किस प्रकार सामाजिक व्यवहार करना चाहिए, यह भी सिखाया।

श्री साईं बाबा के पास ऐसे बड़े-बड़े अधिकारी, अधिवक्ता, चिकित्सक, विद्वान पुरुष, व्यापारी, धनवान सेठ, कुलीन ब्राह्मण, साधु-संत और अन्य ज्ञानी-ध्यानी भी आते थे, जो उन्हें मुस्लिम फ़क़ीर समझते थे। वे यह सोच कर शिर्डी आते थे कि न तो उनको प्रणाम करेंगे और न ही दक्षिणा अर्पित करेंगे। लेकिन, जब वे बाबा को एक दृष्टि से निहारते थे, तो उनमें अपने इष्टदेव के दर्शन पाते थे। तब वे अपने अभिमान को त्याग कर न केवल उनके श्री-चरणों में पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते थे, बल्कि अपनी स्वयं की इच्छा से उन्हें दक्षिणा भी अर्पित करते थे।

श्री साईं बाबा अपने जीवन काल में ही नहीं, बल्कि आज भी यदि मनुष्य के मन में उनके प्रति ऐसे कोई विचार आते हैं, तो वे उसके अज्ञान को समाप्त करके अपने श्री-चरणों में सदा के लिए नत-मस्तक कर देते हैं। इस सम्बन्ध में, अपना स्वयं का उल्लेख भी करना चाहूँगा कि श्री साईं बाबा ने अपने श्री-चरणों में किस प्रकार नत-मस्तक करवा कर मेरे ऊपर अनुकम्पा की।...

मुझसे मेरी पत्नी ने लोदी रोड़, नई दिल्ली स्थित श्री साईं बाबा के मंदिर में दर्शन करने के लिए कई बार अनुरोध किया। लेकिन, चूँकि मेरा मूर्ति पूजा में कोई विश्वास नहीं था, इसलिए मैं हर बार श्री साईं बाबा मंदिर में जाने के लिए मना कर देता था। लेकिन, उसके बार-बार अनुरोध करने पर जनवरी, २००६ में एक दिन बृहस्पतिवार

को उसके साथ लोदी रोड़, नई दिल्ली स्थित साईं मंदिर गया। उस समय मेरी पत्नी ने पुष्पों की माला अर्पण कर बाबा के दर्शन किये। चूँकि, उन दिनों मैं नास्तिक था, इसलिए मैं बाबा के दर्शन करने के लिए उनकी प्रतिमा के पास तक नहीं गया और मंदिर के मुख्य दरवाज़े के पास स्थित चबूतरे पर बैठ गया। मैं वहाँ लगभग आधा घंटा रहा और इस बीच मेरे मन में यही विचार आया कि ये सब कुछ व्यर्थ की चीज़े हैं तथा कहीं भी भगवान् नहीं है।

इसके कुछ दिनों के पश्चात् नवयुग स्कूल, लोदी कालोनी, नई दिल्ली के पास रात्रि में साईं सन्ध्या हो रही थी। मैं और मेरी पत्नी टहलने के लिए निकले हुए थे। मेरी पत्नी ने मुझसे फिर कहा कि बाबा का जागरण हो रहा है, वहाँ बैठ कर बाबा के भजन सुनते हैं। मेरे मन में पुनः वही पूर्व विचार आया कि यह सब कुछ बेकार है और कहीं कोई भगवान् नहीं है। लेकिन, उसके कहने पर मैं श्री साईं बाबा के जागरण में बैठा और वहाँ हम लगभग दो–ढ़ाई घंटे तक रहे। मैंने वहाँ बाबा के भजनों का बड़े ध्यान से श्रवण किया तथा कुछ समय ध्यान भी लगाया। मुझे वहाँ पहली बार अनुभूति हुई कि वास्तव में अन्य कहीं कोई

भगवान् है या नहीं, लेकिन श्री साईं बाबा ज़रूर है।

श्री साईं बाबा के जागरण के ३ दिनों के बाद २६ जनवरी, २००६ को अवकाश था और वार था बृहस्पति का। उससे एक दिन पहले अचानक ही मेरे हृदय में लोदी रोड़, नई दिल्ली स्थित श्री साईं बाबा मंदिर में श्री साईं के दर्शन करने की इच्छा प्रथम बार जागृत हुई तथा मैंने अपनी पत्नी से स्वयं कहा कि कल बृहस्पतिवार का दिन है और अवकाश भी है, बाबा के दर्शन करने के लिए लोदी रोड़ मंदिर जायेंगे। मैं उस दिन अपनी पत्नी और परिवार के साथ श्रद्धापूर्वक सच्ची निष्ठा से बाबा के मंदिर में दर्शन हेतु गया। उस दिन मैंने जैसे ही श्री साईं बाबा की प्रतिमा को अपने जीवन में प्रथम बार तहे दिल से देखा, तो मेरे नेत्रों से प्रसन्नता के आँसू स्वतः प्रवाहित होने लगे और बाबा ने मुझे अपने श्री-चरणों के सन्निकट बहुत ज़बरदस्त रोमांच (कंपन) देकर झकझोर दिया। मुझे उस समय जो आनंद आया, उसका मैं बयान भी नहीं कर सकता। मैं उन क्षणों को आज तक नहीं भूल पाया हूँ। आज भी श्री साईं बाबा अपने पवित्र तीर्थ धाम शिर्डी में ही नहीं, बल्कि अन्य कहीं भी ऐसे पावन स्थल, जहाँ उनकी प्रतिमा विराजमान है, वे इसी तरह रोमांच देकर भावविभोर कर देते हैं। उस दिन बाबा के दर्शनोपरांत जो भी राशि मेरे पास थी, उसमें से कुछ राशि बाबा के चरणों में अर्पित कर दी थी और बाकि बची राशि से बाबा की तस्वीरें खरीद कर प्रसन्नता के साथ घर के लिए प्रस्थान किया था।

२६ जनवरी, २००६ से ही मैंने और मेरी पत्नी ने घर में श्री साईं बाबा की नियमित रूप से पूजा-अर्चना प्रारम्भ की तथा मैंने श्री साईं सत् चरित के एक अध्याय का पठन भी प्रतिदिन अपनी दिनचर्या में शामिल किया। बाबा ने अपनी भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि कराते हुए मुझे अपने श्री-चरणों में स्थान दिया है तथा यह मेरे ऊपर उनकी अपार अनुकम्पा हुई है कि आज जब खाली होता हूँ या निद्रा से उठता हूँ, तो अंदर ही अंदर साईं नाम जप स्वतः चलता रहता है।

मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि श्री साईं बाबा के श्री-चरणों में आने के पश्चात् मुझे पुनर्जन्म प्राप्त होकर मेरे जीवन में एक नया बदलाव आया है तथा आज यदि मैं पूरी तरह सुख, शांति एवं आनंद में हूँ तो वह उन्हीं के आशीर्वाद से हूँ। मेरा पूरा परिवार श्री साईं बाबा का ऋणी है।

मेरा अपना अनुभव है कि भक्तिहीन व ईश्वर में विश्वास न करने वाले व्यक्तियों को सद्गुरु श्री साईंनाथ महाराज के श्री-चरणों में पहुँचने पर ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति प्राप्त होती है और यह मालूम होता है कि मानव जीवन क्या है तथा इस जीवन को कैसे सफल एवं सार्थक बनाना चाहिए? मनुष्य को मायायुक्त संसार को पार करने के लिए सद्गुरु श्री साईंनाथ महाराज को सच्ची निष्ठा से अपने हृदय में धारण करना चाहिए। जैसी जिसकी भक्ति होती है, वैसा ही निरंतर अनुभव भी प्राप्त होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उसे अपने चित्त में जरा सा भी संदेह नहीं रखना चाहिए और भक्ति भाव को दृढ़ता के साथ चित्त में धारण करके सच्चे हृदय से सद्गुरु श्री साईंनाथ महाराज का नियमित रूप से पूजन व उनके नाम का सुमिरन करके उनके अनुभवों को प्राप्त करना चाहिए।

मैं अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर पूर्ण विश्वास व दृढता के साथ यह कह सकता हूँ कि कोई भी श्रद्धालु सच्ची निष्ठा से श्री साईंनाथ महाराज के नाम का सुमिरन, उनकी कीर्ति का गुणगान तथा कथाओं का पठन एवं श्रवण करके सृष्टि के वास्तविक दर्शन कर अपने सांसारिक जीवन को सरलता से सफल बना सकता है।

– सुरेश चन्द्र
२०/२९, लोदी कालोनी,
नई दिल्ली - ११० ००३.
ई-मेल : **sureshchandra1962@gmail.com**
दूरभाष : (०११)२४६४००४६
संचार ध्वनि : (०)९८१८६३९००२

○○○

शान्तिदं, मुक्तिदं, कामदं, कारणं – साईंनाथ

मेरे प्यारे, साईं भक्ति के दिवाने, सभी भक्त जनों को तहे दिल से प्रणाम! उपर्युक्त विषय पर विस्तृत निरूपण करें, उससे पहले बाबा का कार्यकलाप एवं साईं भक्तों का बाबा के प्रति अनुराग और बाबा का भक्तों के प्रति बेशुमार प्रेम की झाँकी कर लें।

दत्तात्रेय के अवतार शिर्डीपति भगवान् साईंनाथ को तो हम हमारे घर–मंदिर में देखतें हैं, उनकी पूजा–अर्चना करते हैं। उनका सुमिरन करते हैं। या फिर, जब हम शिर्डी जातें हैं, तब राजाधिराज श्री साईंनाथ को फूल–हार अर्पण करते हैं। अभिषेक करते हैं। पर, क्या आपने कभी महसूस किया है कि हमारे भक्तवत्सल साईं का दिन प्रात:काल चार बजे आरम्भ होता है, जबकि उस वक़्त संसार के अधिकांश लोग मीठी गहरी नींद का अनुभव कर रहे होते हैं। बाबा की दिनचर्या दिन भर बैठे–बैठे रात लगभग साड़े दस बजे, शेजारती तक चलती रहती है। पूरे दिन हज़ारों लोग बाबा के दर्शन पाकर कृतार्थता का अनुभव करते हैं। एक पल के लिए अपने घर–मंदिर या शिर्डी में विराजित साईं की ओर देखो! उनके चेहरे पर बदलते रहते भाव को देखो!! कभी धीर–गम्भीर, कभी मंद–मंद मुस्कुराते, कभी थकान महसूस करते हुए हमारे बाबा!!! तीज–त्योहार के समय मंदिर निरंतर खुला रहता है। किन्तु, साईं ने अपने द्वार पर आये बंदे को कभी भी खाली हाथ नहीं लौटाया। उसकी हर मुराद पूर्ण की है। कहने को तो साईं एक है, मगर उनके रूप अनेक हैं। समाधि मंदिर में आख़िरी छोर पर खड़े अपने नाचीझ बंदे पर भी श्री साईं की नज़र जाती है। बाबा बोलते नहीं, मगर किसी के भी हाल से बेख़बर नहीं हैं। उनकी करुणामयी आँखें करुणा रूपी प्यार का सागर छलकाती रहती हैं।

अपने घर से अनेक सवालात, मायूसियाँ लेकर आता हुआ बंदा बाबा को जब अपना हाले–दिल सुनाता है, तब ख़ामोश बैठे साईं सबकुछ जान लेते हैं। साईं के आगे झुका हुआ सिर और जोड़े हुए हाथ कमाल कर जाते हैं। जब वह बंदा घर वापस आता है, तब बेबसी, बेकसी के घने बादल छट गये होते हैं। पतझड़ जैसे उसके जीवन में फिर से बहार आयी होती है। जीवन का मंज़र बदला–बदला नज़र आता है। साईं की इस अनोखी लीला देख कर बंदा यही अनुभव करता है –

''जब से पकड़े चरण साईं के,
मन–बुद्धि को छोड़ दिया।
ख़ुद को करके उसके अर्पण,
अपनी ख़ुदी को छोड़ दिया।।''

बाबा हर हाल में हमारे साथ हैं। लेकिन, साथ–साथ यह भी सच है कि बाबा अहंकारी, गलत काम करने वाले से हमेशा यही कहते हैं – **''सदा सावधान रहो! तुम कहीं भी रहो, जो जी चाहे करो, मगर याद रखो, मैं तुम्हारे प्रत्येक पल का हिसाब रखता हूँ। रात के अँधेरे में ऐसा कोई काम ना करो, जिसे सुबह की पहली किरण बर्दाश्त ना कर सके।''**

इसलिए उचित यही है कि हम किसी भी गुनाह से बचके रहें। ख़ता करने वाले को सज़ा भी ज़रूर मिलेगी। भक्तिमय जीवन को जीने वाले हर बंदे को बाबा उबार लेंगे। जैसा कि हमने देखा है, साईं बाबा अनाचरण करने वाले पर गुस्सा हो जाते थे। इतना ध्यान रहे कि बाबा की एक आँख शोला है, तो दूसरी आँख शबनम भी है।

प्रिय भक्तों! जैसा शीर्षक में मैंने बताया है – **शान्तिदं – मुक्तिदं – कामदं – कारणं** – बाबा में ये चारों गुण समाये हैं। आइये, हम शुरुआत करते हैं –

कारणं से। जब–जब धर्म की हानि होती है, तब धर्म की रक्षा के लिए और साधु जनों के परित्राण के लिए भगवान् भूतल पर अवतीर्ण होते हैं।

सत्रहवीं शताब्दी (१६०८ – १६८१) में संत रामदास प्रकट हुए और उन्होंने यवनों से गायों और ब्राह्मणों की रक्षा करने का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। परन्तु, दो शताब्दियों के बीत जाने के बाद हिंदू और मुसलमानों में वैमनस्य बढ़ गया और इसे दूर करने के लिए ही **श्री साईं बाबा प्रकट हुए।**

उनका सभी के लिए यही उपदेश था कि राम और रहीम एक ही हैं। उनमें ज़रा सा भी भेद नहीं है। फिर, तुम उनके बंदों! क्यों अलग–अलग होकर आपस में झगड़ते हो? दोनों एकता साध कर मिलजुलकर रहो! इस प्रकार एकता का ध्येय प्राप्त करो!! कलह और विवाद व्यर्थ है। इसलिए ना झगड़ो और ना परस्पर प्राणघातक बनो। सदैव अपने हित और कल्याण का विचार करो! राम जी तुम्हारी

निःसंदेह रक्षा करेंगे। यदि तुम किसी तरह सफल साधक नहीं बन सकते, तो तुम्हारा जीना व्यर्थ है। यदि कोई शुभ कार्य करने की इच्छा है, तो हमेशा दूसरों की भलाई करो! बाबा तो प्रेम और वात्सल्य की जीती–जागती मिसाल हैं। आज साईं समाधि मंदिर में जाति–पाँति के भेदभाव को भूल कर हर मज़हब के लोग आते हैं। बाबा की जीवन पर्यंत सेवा करने वाले अब्दुल बाबा एकता का प्रतीक हैं।

बाबा का दूसरा अविचल स्वरूप यानि कि **शान्तिदं**। बाबा ने त्रिविध तापों से तपते लोगों पर सदैव अपना ममताभरा आँचल फैलाया है। बाबा ने इस भवसागर पर विजय प्राप्त कर ली थी। शांति उनका अनमोल गहना था। अनित्य वस्तु का आकर्षण उन्हें छुआ भी नहीं था। मान–अपमान की उन्हें किंचित् मात्र भी चिंता न थी। दक्षिणमुख बैठ कर जलती धूनी में शांति से लकड़ियाँ डालते रहते थे। **''अल्लाह मालिक''** सदैव उनके होंठो पर रहता था। उनका अंतःकरण प्रशांत महासागर की तरह शांत था। बाबा बहुत कम बोलते थे। उनके दर्शनमात्र से मन को परम शांति का अनुभव होता था। इसका एक मात्र उदाहरण ही काफ़ी है।

नासिक ज़िले के वणी गाँव में काका जी वैद्य रहते थे। वे श्री सप्तश्रृंगी माता के प्रमुख पुजारी थे। एक बार वे कुछ संकटों में ऐसे उलझ गये कि उनके चित्त की शांति भंग हो गई और वे बिल्कुल हताश हो उठे। व्यथित होकर उन्होंने माता को गुहार लगाई। माता ने प्रसन्न होकर काका जी को बताया कि तू बाबा के पास जा! वहाँ तेरा मन शांत हो जायेगा। बाबा का परिचय पाने के लिए उत्सुक काका जी की निद्रा भंग हो गई। उन्होंने यह सोचा कि यह कौन से बाबा हैं। हो सकता है कि वे त्र्यंबकेश्वर बाबा हो। वे त्र्यंबक गये। थोड़े दिन वहीं पर ठहरे। रुद्रमंत्र का जाप एवं अभिषेक भी किया। परन्तु, उनका मन पहले की तरह अशांत रहा। घर वापस आये। करुण स्वर में देवी की पुनः स्तुति की। दयार्द्र माता ने कहा कि बाबा से मेरा अभिप्राय शिर्डी के साईं समर्थ से था। काका जी के मन में प्रश्न उठा कि शिर्डी कैसे जायें? जब काका जी शिर्डी यात्रा का विचार कर रहे थे, तब अपनी भूली एक प्रतिज्ञा को पूर्ण करने शामा वणी आये। जब काका जी को ज्ञात हुआ कि शामा शिर्डी से आये हैं, तब वे प्रेमोन्मत हो, उन्हें गले मिले। बाद में काका जी शामा के साथ शिर्डी गये। काका जी मस्जिद पहुँच कर बाबा के श्री–चरणों से लिपट गये। उनकी आँखें भर आईं। उनका मन शांत हो गया। काका जी सोचने लगे कि कैसी अद्भुत शक्ति! बिना कोई संभाषण, बिना कोई प्रश्नोत्तर दर्शनमात्र से प्रसन्नता का अनुभव! उनकी तृषित आँखें साईं–चरणों में स्थिर हो गईं। वे अपने मुँह से एक शब्द भी ना बोल सके। वे पूर्णतः बाबा के शरणागत हो गये। बाबा को एक बार देख लेना ही जीवन की सार्थकता है। कुछ मत कहो; बस्, देखते रहो भोले साईं को।

बाबा की एक और विलक्षणता – **मुक्तिदं**। बाबा मोक्ष का द्वार हैं। बाबा ने अपने अवतार काल में अनेक लोगों को मुक्ति–दान दिया है। बाबा ने एक मद्रासी सन्यासी विजयानंद को मोक्ष प्रदान किया। मानसरोवर जाने की इच्छा थी, मगर राह में आने वाली बाधाओं को जान कर अपनी यात्रा स्थगित कर सन्यासी विजयानंद शिर्डी आये। बाबा पहले तो क्रोधित हुए। परन्तु, वहाँ की गतिविधियाँ देख कर सन्यासी शिर्डी में रह गया। अपनी माता की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है, ऐसा पत्र पाकर वह बाबा के पास गया। बाबा को पत्र दिखाया। बाबा ने कहा कि सन्यासी को ऐसा मोह शोभा नहीं देता। त्रिकालदर्शी बाबा को उसकी मृत्यु निकट आई दिखाई दी। बाबा ने उसे 'रामविजय' पढ़ने की आज्ञा दी। लेंडी बाग में बैठ कर सन्यासी ने पाठ प्रारम्भ कर दिया। दूसरी बार पठन समाप्त होने पर वह थक गया। वाड़े में आकर दो दिन ठहरा और तीसरे दिन बड़े बाबा की गोद में उसने देह त्याग दिया। बाबा ने इस प्रकार सन्यासी की सहायता कर उसे मुक्ति प्रदान की।

बालाराम मानकर बाबा के परम भक्त थे। मन में उठते संकल्प–विकल्प से दूर होने के लिए बाबा ने बारह रुपये देकर उन्हें ज़िला सातारा स्थित मच्छिंद्रगढ़ भेजा। बाबा ने मानकर को प्राकृतावस्था में दर्शन देकर कहा कि शिर्डी में तुम मुझे देखते हो, उसी तरह यहाँ तुम्हारे सामने मैं हूँ; उसमें कोई भिन्नता नहीं है। मानकर की पत्नी का देहांत हो चुका था। इसलिए एक बार वे अपने घर गये। फिर शिर्डी लौट आये। वे भाग्यशाली रहे कि अन्ततः उन्होंने बाबा के सामने उनका आशीर्वाद पाकर मुक्ति पा ली।

ऐसे ही परम भक्त तात्यासाहेब नूलकर थे। पहले पहल तात्यासाहेब संतों में अविश्वास रखते थे। नानासाहेब उनके घनिष्ठ मित्र थे। उनके आग्रह करने पर वे बाबा के

(पृष्ठ ३४ पर)

साईंनाथ तेरे हज़ारों हाथ...

सारी दुनिया में कोरोना ने विष बरसाया...
तुम अमृत बरसा दो साईं बाबा, मेरे साईं बाबा!

आज पूरा देश मौत की कगार पर खड़ा है, कोरोना के भयावह काले बादल सिर पर मंडरा रहे हैं। देश में लॉकडाऊन के कारण उसकी गतिशीलता थम गई। श्री गुलजार जी के शब्दों में ''बेवजह घर से निकलने की ज़रूरत क्या है?

सबको मालूम है, बाहर की हवा है क़ातिल
यूँही क़ातिल से उलझने की ज़रूरत क्या है?
ज़िंदगी एक क़ीमत है, उसे सम्भालकर रखो
क़ब्रगाहों को सजाने की ज़रूरत क्या है?
दिल बहलाने के लिए घर में वजह है काफ़ी
यूँही गलियों में भटकने की ज़रूरत क्या है?

सबकुछ बंद होने से लगता था कि पूरा जहाँ सो गया है, सारे रास्ते, सारी पगडंडियाँ मानो सो गई हैं! कोरोना की वजह से आलीशान बंगलों में रहने वाला रईस तथा पैदल सैंकड़ों मील चलने वाला मज़दूर दोनों आज एक ही स्तर पर हैं। सारे धार्मिक स्थल बंद होने की वजह से लाखों लोगों को भगवान् के दर्शन दुर्लभ होने लगे।

पर, मजे की बात यह है कि श्री साईं बाबा मंदिर में रहते हुए भी संकट में पड़े भक्तों का संकट दूर करने के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने अपने हज़ारो हाथों से काम करने के लिए विविध रूप धारण किये।

श्री साईं सत् चरित के अध्याय १ में हम पढ़ते हैं कि बाबा के अवतार काल में महामारी से शिर्डी गाँव को बचाने के लिए बाबा ने स्वयं चक्की में आटा पीस कर वह आटा गाँव की सीमा रेखा पर डलवाया और संक्रमण होने से महामारी को रोक दिया। वैसे ही कोरोना के कारण सभी राज्यों की सीमा रेखाएँ सील कर दी गईं।

श्री साईं सत् चरित के अध्याय ७ में हम पढ़ते हैं... लगभग सन् १९१० की बात है। बाबा दीपावली के शुभ अवसर पर धूनी के समीप बैठे उसमें लकड़ियाँ डाल कर अग्नि ताप रहे थे। धूनी आग उगल रही थी। यकायक ही उन्होंने धूनी में लकड़ियाँ डालना बंद कर अपना हाथ उसमें डाल दिया। हाथ बुरी तरह से झुलस गया। नौकर माधव और माधवराव देशपांडे मस्जिद में उपस्थित थे। बाबा को धूनी में हाथ डालते देख कर वे तुरंत दौड़ कर आये और उन्होंने बाबा को बलपूर्वक पीछे खींच लिया। माधवराव ने बाबा से पूछा, ''देवा! आपने ऐसा क्यों किया?'' बाबा ने सावधान होते हुए बताया... ''यहाँ से कुछ दूरी पर एक लुहारिन अपने पति की आवाज़ सुन कर उसकी ओर दौड़ पड़ी। वह भूल गई की उसकी कमर पर उसकी बच्ची बैठी हुई है। पति के निर्देश पर वह भट्टी धौंकने लगी। उसका ध्यान भट्टी धौंकने में था। अचानक नटखट बच्ची फिसल

कर भट्टी में गिरने ही वाली थी, मैंने तुरंत भट्टी में हाथ डाल कर उस बच्ची के प्राण बचा लिये। मुझे अपना हाथ जल जाने का कोई दुख नहीं है, परंतु मुझे संतोष है कि एक मासूम बच्ची के प्राण बच गये।''

इसी तरह श्री साईं सत् चरित के अध्याय ३३ में हम पढ़ते हैं कि बाबा ने नानासाहेब चाँदोरकर की प्रार्थना सुन कर उनकी मदद कैसे की।... लगभग सन् १९०४-०५ में घटित यह घटना है। ठाणे के सेवानिवृत्त बालासाहेब देव ने नानासाहेब चाँदोरकर के पुत्र बापूसाहेब चाँदोरकर और शिर्डी के रामगीर बुवा से इस संबंध में पूरी जानकारी हासिल की। वह उन्होंने श्री साईं बाबा संस्थान, शिर्डी द्वारा प्रकाशित श्री साईं लीला पत्रिका में गद्य और पद्य रचना में प्रकाशित की। बी. वी. नरसिंह स्वामी ने भी उनकी किताब 'भक्तों के अनुभव' में नानासाहेब की पुत्री मैनाताई, बापूसाहेब चाँदोरकर और रामगीर बुवा के कथन प्रकाशित किये हैं। उनमें से उस अवसर पर मध्यस्थ बने रामगीर बुवा का कथन इस प्रकार है...

''एक दिन बाबा ने मुझे अपने समीप बुला कर एक उदी की पुड़िया और आरती की प्रतिलिपि देकर आज्ञा दी कि 'जामनेर जाओ और यह आरती तथा उदी नानासाहेब को दे दो!' मैंने बाबा को बताया कि मेरे पास केवल दो रुपये ही हैं, जो कि कोपरगाँव से जलगाँव जाने और फिर वहाँ से बैलगाड़ी द्वारा जामनेर जाने के लिए अपर्याप्त हैं। बाबा ने कहा, 'अल्ला देगा।' दिन शुक्रवार का था। मैं शीघ्र ही रवाना हो गया। मैं सायंकाल ६.३० बजे मनमाड और रात २ बज कर ४५ मिनट पर जलगाँव पहुँचा। उस समय प्लेग निवारक आदेश जारी थे, जिससे मुझे असुविधा हुई और मैं सोच रहा था कि जामनेर कैसे पहुँचूँ। रात ३ बजे एक चपरासी आया, जो पैर में बूट पहने, सिर पर पगड़ी बाँधे और अन्य पोशाक परिधान किये हुए था। उसने मुझे ताँगे में बिठा लिया और ताँगा चल पड़ा। मैं उस समय भयभीत सा हो रहा था। मार्ग में हमने जलपान किया। जब प्रात:काल जामनेर पहुँचे, तब मैं लघुशंका करने गया। जब मैं लौट कर आया, तब देखा कि वहाँ कुछ भी नहीं है; ताँगा और ताँगे वाला अदृश्य हैं।''

रामगीर बुवा अचरज में पड़ गये। वे समीप ही कचहरी में पूछताछ करने गये। वहाँ उन्हें पता चला कि इस समय मामलतदार नानासाहेब चाँदोरकर घर पर ही हैं। वे नानासाहेब के घर गये और उन्हें बतलाया कि वे शिर्डी से बाबा की आरती और उदी लेकर आये हैं। उस समय नानासाहेब की पुत्री मैनाताई की स्थिति बहुत ही गम्भीर थी और सभी को उसकी चिंता लगी हुई थी। नानासाहेब ने अपनी पत्नी को बुलवा लिया और उदी को जल में मिला कर अपनी लड़की को पिला देने और आरती करने को कहा। उन्होंने सोचा कि बाबा की सहायता बड़ी सामायिक है। थोड़ी देर में ही समाचार प्राप्त हुआ कि प्रसव कुशलतापूर्वक होकर समस्त पीड़ा दूर हो गई है। जब रामगीर बुवा ने नानासाहेब को चपरासी, ताँगा तथा जलपान आदि रेल्वे स्टेशन पर भेजने के लिए धन्यवाद दिया, तो नानासाहेब को यह सुन कर महान् आश्चर्य

हुआ, और वे कहने लगे कि उन्होंने न तो कोई ताँगा, न चपरासी, ना ही जलपान भेजा था, और न ही उन्हें शिर्डी से इस बारे में कोई पूर्वसूचना मिली थी।

कुछ ऐसी ही घटना कोरोना काल में हमें देखने को मिली। एक महिला अपने घर में अकेली थी। लॉकडाऊन की वजह से उसका पति बाहर गाँव अटक गया था। अचानक उस महिला को प्रसव वेदना शुरू हुई। उसने पुलिस से मदद माँगी। पुलिस ने तुरंत उसकी सहायता की; उस महिला के घर जाकर उसे अस्पताल पहुँचाया; और महिला व उसके बच्चे की जान बच गई।

श्री साईं सत् चरित के अध्याय ८ में श्री साईं बाबा की भिक्षावृत्ति के बारे में लिखा हुआ है।...

बाबा ने, भिक्षा में मिला कोई भी पदार्थ स्वादिष्ट है या नहीं, इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया, मानो उनकी जिह्वा में स्वाद बोध ही न हो! वे केवल मध्यान्ह तक ही भिक्षा-उपार्जन करते थे। यह कार्य बहुत अनियमित था। किसी दिन तो वे छोटी सी फेरी ही लगाते तथा किसी दिन बारह बजे तक। वे एकत्रित भोजन एक कुंडी में डाल

देते, जहाँ कुत्ते, बिल्लियाँ, कौवे आदि स्वतंत्रतापूर्वक भोजन करते थे। बाबा ने उन्हें कभी नहीं भगाया। एक स्त्री भी, जो मस्जिद में झाड़ू लगाया करती थी, रोटी के दस-बारह टुकड़े उठा कर अपने घर ले जाती थी; परंतु किसी ने कभी उसे नहीं रोका। बाबा की यह सभी को शिक्षा थी। जिन्होंने स्वप्न में भी बिल्लियों और कुत्तों को कभी दुत्कार कर नहीं भगाया, वे भला निस्सहाय ग़रीबों को रोटी के कुछ टुकड़ों को उठाने से क्यों कर रोकते!... बाबा लोगों को भोजन कराते थे। इसके लिए प्रारम्भ से लेकर अंत तक सम्पूर्ण व्यवस्था वे स्वयं किया करते थे। वे किसी पर निर्भर नहीं रहते थे, और न ही किसी को इस संबंध में कष्ट ही दिया करते थे।... जब भोजन तैयार हो जाता, तब वे मस्जिद से बर्तन मँगवा कर मौलवी से फातिहा पढ़ने को कहते थे; फिर वे म्हालसापति तथा तात्या पाटील के प्रसाद का भाग पृथक् रख कर शेष भोजन ग़रीब और अनाथ लोगों को खिला कर उन्हें तृप्त करते थे। सचमुच वे लोग धन्य थे! कितने भाग्यशाली थे वे, जिन्हें बाबा के हाथ का बना और परोसा हुआ भोजन खाने को मिला!!...

बाबा का यही रूप हम सेवाभावी संस्थाओं के सेवेकरी लोगों में देख रहे हैं, जो लाखों ग़रीबों को, दूसरे राज्य में जाने वाले मज़दूरों को, असहाय्यों को खाना खिला रहे हैं। हिंदू लावारिस लाशों का अंत्यसंस्कार मुस्लिम लोग कर रहे हैं। अनायास ही हिंदू-मुस्लिम के बीच की खड़ी दीवारें गिर पड़ रही हैं। बाबा की 'सबका

मालिक एक' की शिक्षा प्रचलित होती दिखाई दे रही है। लोगों में सकारात्मक भावना, इन्सानियत जाग उठी है। रक्तदान करने, अपने शरीर के प्लाझमा का दान करने के लिए लोग आगे आ रहे हैं। कोरोना संकट का मुक़ाबला करने के लिए ऐसी उत्तेजना की आवश्यकता है।

श्री साईं सत् चरित के अध्याय ४६ में हम पढ़ते हैं कि बाबा ने गया गये माधवराव देशपांडे उर्फ़ शामा और आप्पा कोते को गया में संक्रमित प्लेग की चिंता से कैसे मुक्त किया।...

काकासाहेब दीक्षित ने अपने ज्येष्ठ पुत्र बापू का नागपुर में उपनयन संस्कार करने का निश्चय किया। लगभग उसी समय नानासाहेब चाँदोरकर ने भी अपने ज्येष्ठ पुत्र की शादी ग्वालियर में करने का कार्यक्रम बनाया। काकासाहेब और नानासाहेब दोनों ही शिर्डी आये, और प्रेमपूर्वक उन्होंने बाबा को निमंत्रण दिया। तब बाबा ने अपने प्रतिनिधि शामा को ले जाने को कहा। परंतु, जब काकासाहेब और नानासाहेब ने उन्हें स्वयं पधारने के लिए उनसे आग्रह किया, तो बाबा ने उत्तर दिया कि ''बनारस और प्रयाग निकल जाने के पश्चात्, मैं शामा से पहले ही पहुँच जाऊँगा।'' बाबा के ये शब्द उनकी सर्वज्ञता के बोधक हैं।...

बाबा की आज्ञा प्राप्त कर शामा आप्पा कोते सहित उल्लेखित उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए पहले नागपुर, ग्वालियर और उसके पश्चात् काशी, प्रयाग और गया के लिए निकल पड़े। नागपुर और ग्वालियर के समारोह में शामिल होने के बाद वे काशी और वहाँ से अयोध्या गये। अयोध्या में २१ दिन तथा काशी (बनारस) में दो मास ठहर कर फिर गया को रवाना हो गये। गया में प्लेग फैलने का समाचार सुन कर वे दोनों चिंता में पड़ गये। लेकिन, बाबा ने तो पहले ही कह रखा था, ''शामा से पहले ही मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा'' अपने इस वचन को निभाते हुए बाबा ने, गयावाला पुजारी (पंडा), जो यात्रियों के ठहरने और भोजन की व्यवस्था किया करता था, को प्रेरणा देकर शामा और आप्पा को चिंता मुक्त किया, और गयावाला के भवन में अपने चित्र के रूप में दर्शन देकर उन्हें अनुभूति दी कि उनकी चिंता दूर करने, उनकी व्यवस्था करने उनके पहले ही वे वहाँ उपस्थित हैं।

अवतार काल के बाद भी बाबा ऐसी प्रतीति दे रहे हैं। उनके विविध रूप कोरोना काल में हम देख रहे हैं। सिर पर कफ़न बाँध कर २४ घंटे काम करने वाले डॉक्टर्स, नर्सेस, पुलिस, सेवाभावी संस्थाओं में काम करने वाले सेवक, सफ़ाई कामगार, समाज माध्यमों के समाचार देने वाले संवाददाता अपनी जान की पर्वा न करते हुए, अपने परिवार से बिछड़ कर दिन-रात काम कर रहे हैं।... ये ही हमारे साईं के रूप हैं।

मुझे केवल यक़ीन ही नहीं, बल्कि पूरा विश्वास है कि 'कोरोना' संकट से हम ज़रूर बाहर आयेंगे; क्योंकि श्री साईं बाबा के रूप में हमारे साथ डॉक्टर्स, नर्सेस, सफ़ाई कामगार, समाज सेवक, पुलिस, समाज माध्यम के संवाददाता, अन्न, अर्थ, रक्त, प्लाझमा दान करने वाले दाता हैं; उनको त्रिवार अभिवादन! बाबा को कहाँ से भी किया गया प्रणाम उन तक ज़रूर पहुँचता है। आवश्यकता है उनके श्रद्धा-सबूरी के संदेश को आचरण में लाने की।

साईं... साईं रटते जाऊँ...
और हर एक इन्सान में तुझको ही पाऊँ।

– श्रीमती अरुणा वि. नायक
अवकाशप्राप्त सहायक महाप्रबंधक,
रिज़र्व बैंक, मुम्बई

❍❍❍

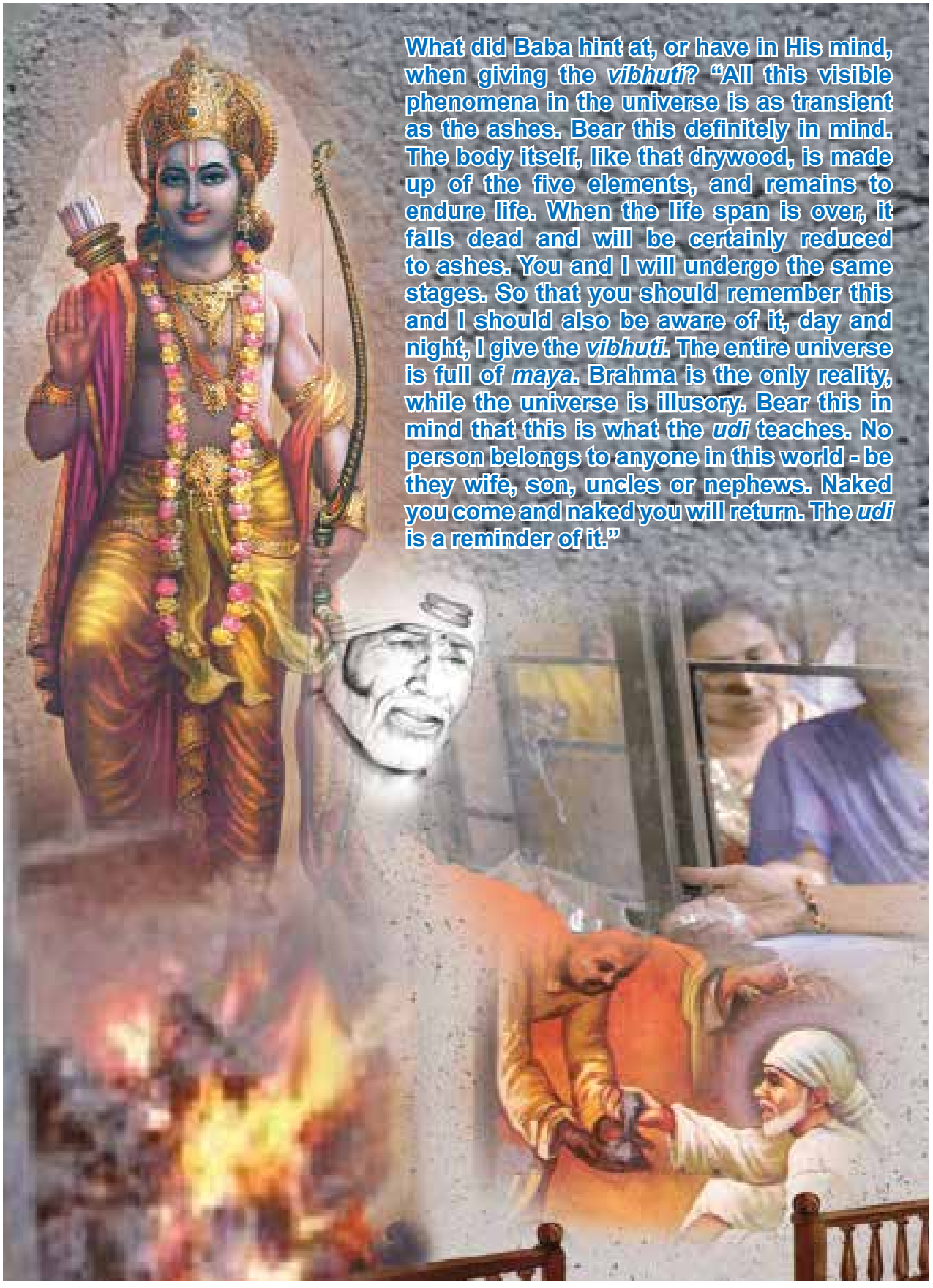
What did Baba hint at, or have in His mind, when giving the *vibhuti*? "All this visible phenomena in the universe is as transient as the ashes. Bear this definitely in mind. The body itself, like that drywood, is made up of the five elements, and remains to endure life. When the life span is over, it falls dead and will be certainly reduced to ashes. You and I will undergo the same stages. So that you should remember this and I should also be aware of it, day and night, I give the *vibhuti*. The entire universe is full of *maya*. Brahma is the only reality, while the universe is illusory. Bear this in mind that this is what the *udi* teaches. No person belongs to anyone in this world - be they wife, son, uncles or nephews. Naked you come and naked you will return. The *udi* is a reminder of it."

… Similarly, another well-known saint, named Anandnath, had predicted for Shri Sai Baba that He would perform miraculous deeds. This famous Anandnath had established a *matha* in Yeola. He came to Shirdi once, along with some of the dwellers of Shirdi. Anandnath, who was the disciple of the great Saint of Akkalkot, when he saw Sai, exclaimed, "This is indeed a diamond, a real diamond. Though to-day He is lying on the garbage heap (i.e. neglected), it is not just a flint, but a diamond." These were the words of Anandnath, when Shri Sai Baba was a youngster. "Mark my words carefully. Later on, you will recall them." After prophesying thus, he returned to Yeola…

… Here, under the neem tree, a devotee named Bhai, installed the *Padukas* of Akkalkot Swami, for worship by devotees. Swami Samartha of Akkalkot was the chosen Deity of Bhai, who worshipped His portrait regularly with devotion. He thought of going to Akkalkot to have the *darshan* of the *Padukas* and to offer worship to them with his heart and soul. He got ready to start from Mumbai the next day. But, that decision remained unfulfilled, and instead, he left for Shirdi. One day, before his departure, he saw a vision. Akkalkot Swami commanded him, "At present Shirdi is my abode. You go there!" Obeying the command with reverence, Bhai left Mumbai. He lived in Shirdi for six months and was at peace and happy. Bhai was full of devotion. So, to commemorate the vision, he installed the Swami's *Padukas* under the neem tree. In *shake* 1834 (AD 1912), in the bright half of the month of Shravan, on

an auspicious day, the *Padukas* were installed under the neem tree with the singing of *bhajans* and with great devotion. At the auspicious *muhurta*, the installation ceremony was done by Dada Kelkar, while the rites and rituals were performed by Upasani according to the *shastras*. For the future, arrangements were entrusted to a *Brahmin*, named Dixit, who would perform the *pooja* and a devotee, by the name Sagun, looked after the management. This is the story of the *Padukas*.

… Pitale was a wealthy man from birth. He came from a good and well-known family. He lavishly distributed sweets and dry fruits and even offered fruits, betel-leaves etc. to Baba. His wife was of a very *sattvik* nature – loving, having faith and devotion. She would sit near the pillar, gazing at Baba. As she gazed, her eyes would fill with tears. She did this daily. Seeing her novel way of showing affection, Baba was won over by her. Saints are like God – they are ever at the service of the devotees. They are very gracious to those, who worship them whole-heartedly. May it be whatsoever. Then, this family desired to leave. They came to the *Masjid* for *darshan*, and took Baba's permission and the *udi*; and made preparations to leave. At that time, Baba took out three rupees from His pocket and called Pitale, close to Him. Hear what He said, "Bapu, earlier I had given you two rupees. Add these three to them and worship them. You will be benefitted." Pitale took the rupees in his hands and accepted them with joy as *prasad*. He prostrated at Baba's feet and said, "Grant me Your grace, Maharaj." Waves of thoughts arose in his mind... 'This is my first visit. So, what is it that Baba is saying? I am definitely not able to understand. As I had not seen Baba earlier, how could He have given me two rupees earlier?' He could not at all understand the meaning or the advice. Pitale was bewildered... 'How do I get the meaning explained?' His curiosity increased. Baba did not give any indication and remained silent. Any words spoken by saints, however casually, are bound to prove true. Pitale was fully aware of this, so he was puzzled. But, later, when he returned to his home at Mumbai, there was an old woman at home, who satisfied his curiosity. The old woman was Pitale's mother. When she enquired about what had transpired at Shirdi, as a matter of course, the topic about the three rupees cropped up. Even she was unable to co-relate it. After thinking it over, she remembered, and the old lady said to Pitale, "Now I recall completely. What Baba said is true. As you took your son now to Shirdi for Sai's *darshan*, similarly your father had earlier taken you to Akkalkot. The Maharaj there was a *Siddha*, Benevolent, Very Famous, Omniscient, *Yogi*, Very Wise. Your father was also a very moral man. He accepted your father's worship, and the *Yogiraj* was pleased with it. As *prasad* He gave him two rupees, in order to perform *pooja*. These earlier two rupees too, Swami gave to you, my son, as *prasad* in order to worship. These two rupees were kept in the shrine and your father daily worshipped them with great faith. I alone know about his faith. He acted according to his faith. After his death, the *pooja* and the articles for performing it became children's playthings. There was no faith in God; and even shame was felt to do *pooja*. The children were appointed, in turns, to do the *pooja*. Who would take care of the rupees? Many years passed thus. The importance of those rupees was lost. All memory of them faded away. The two rupees disappeared. So be it. You are really blessed. Not only have you met Maharaj, in the form of Sai, to remind you of a forgotten duty, but to ward off dangers.

Therefore, from now onwards leave off all doubts and bad thoughts. Follow in the footsteps of your ancestors and do not slip into bad habits. Go on worshipping the rupees. Consider the Saint's *prasad* as a jewel. Samartha Sai has convinced you of this significance and revived a life of *bhakti*." Hearing this story from his mother, Pitale was full of bliss and joy. He realised Sai's all-pervasiveness and the significance of His *darshan*. That nectar of his mother's words awakened his former feelings. He repented and atoned paving the way for his future welfare. So be it. Whatever had to happen, happened! The Saint had awakened in him the future obligations. Gratefully and conscientiously he, thereafter, carried out his duties…

… Similar is the another experience... Listen to it with a quiet mind. It shows the method adopted by Shri Sai Baba to control undisciplined devotees. Gopal Narayan Ambdekar, was a great devotee of Baba, from Pune. Listen to his story… He was in service in the excise department of the British regime. After completing service for ten years, he left it and stayed at home. Fortune changed and turned its back on him. All the days of one's life are not the same. The stars rotated and brought a bad spell. Who is there, who can avoid these changes? In the beginning, he was in service in Thane district and later his luck brought him to Javhar, where he was an officer. It is there that he became jobless. To regain a job is not easy. Where could he get it again? He tried his level best at that time. But, he did not succeed. So, he decided to follow an independent trade, but here too troubles beset him until he finally lost all hope. Year after year, his financial condition worsened till he hit rock bottom. Calamities followed one after the other and the household condition became unbearable. Seven years passed this way. Each year he went to Shirdi and related his grievances to Baba, imploring him with prostrations day and night. In 1916, he was so utterly disgusted that he felt like committing suicide after going to Shirdi. So, this time he stayed for two months at Shirdi with his wife... Listen to the story of what happened one night… While sitting in a bullock-cart, in front of Dixit's *wada*, Ambdekar was in deep thoughts. Fed up with life and very depressed, he thought 'enough now! No more of this trouble.' He lost the desire to live. Thinking thus and having lost interest in life, Ambdekar got ready to throw himself immediately into

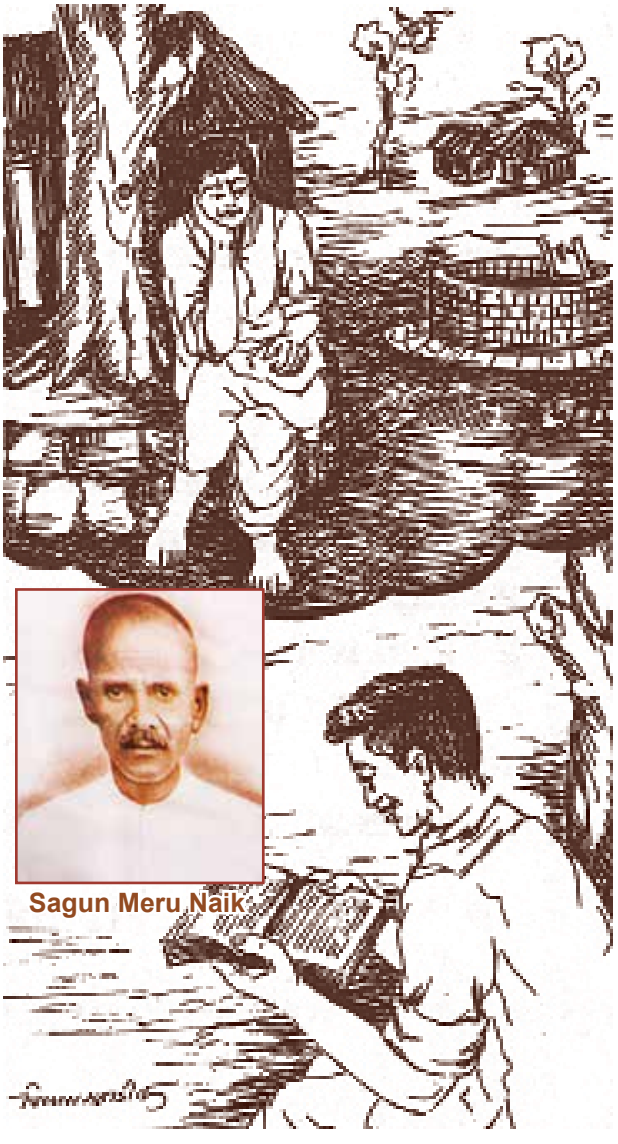

the well. 'Availing of a quiet time, when there would be nobody around, I will carry out my purpose and rid myself of all the troubles.' He knew that committing suicide was a great sin. Yet he determined to act upon his thought. But, Baba Sai, being the puppeteer, He averted this folly. At a very short distance, there was the residence of a hotel owner, who also had Baba's support, being one of the persons, who served Baba. Sagun came to the threshold of his house, at that time, and asked Ambdekar, "Have you ever read this book on the life of Akkalkot Maharaj?" "Let me see, let me see. What is that book?" Saying that Ambdekar took it in his hand. Turning the pages at random, he began to read here and there. By wonderful coincidence, the subject, which he came across was worth reading as it related to his inner thoughts. He was deeply impressed. I will relate for all the listeners the story that he came across by chance, giving the sum and substance of the story very briefly, for fear of lengthening this book. There was a great Saint at Akkalkot. Maharaj used to be absorbed in meditation. A devotee, who was grievously ill, was undergoing unbearable suffering. He had served for a long time hoping to be rid of the disease. He was unable to bear the pain anymore. He became very dejected. He determined to commit suicide, and choosing a time in the night, going to a well, he threw himself in it. Maharaj came there at that time and pulled him out with his own hands. "Whatever is destined has to be fully borne", He advised him. "All physical tribulations, diseases, even leprosy and all other problems, which we have, because of our actions in the previous birth, unless they are fully borne, we cannot be free from them, even by committing suicide. If this suffering remains unfinished, you have to be born again. Therefore, try to bear up with this trouble a little longer. Do not kill yourself." Reading this story, which was apt for the occasion, Ambdekar was surprised and felt ashamed on the spot, understanding Baba's all-pervasiveness. Ambdekar realised that the fate due to previous birth must be endured. He was made to understand this at the right time and it was good that he had not attempted the reckless deed. This illustrative story was like a voice from outer space. It strengthened his faith at Sai's feet. Sai's deeds are unimaginable. 'Sai's warning guided through Sagun's words. If there had been some delay in getting this unexpected book, my life would have been ruined. I would have lost my own life, and would have caused utter destruction of the family. My wife would have had to undergo a lot of suffering, and I would not have achieved my own good, nor attained my spiritual goal. Baba inspired Sagun and made the book an instrument to divert my mind from committing suicide.' If such an incident had not occurred, the poor man would have unnecessarily lost his life. But, where, there is a saviour like Sai, who would be able to kill? This devotee's father had faith in Akkalkot Swami. Baba made him understand that he should follow in his father's footsteps… So be it. Later, everything was well. Those days passed. He studied astrology, putting in a lot of efforts, and that was rewarding. He got Sai's grace and blessings. Fortune smiled upon him, later on. He became well-versed in astrology and his earlier adverse circumstances ended. His love for the *Guru* increased, and he achieved happiness and health. He had ease and happiness in family life. He became very happy.

– Govind (Annasaheb) Raghunath Dabholkar alias Hemadpant narrates in SHRI SAI SATCHARITA

Public Disclosure

The Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi makes it known to the devout-devotees that the Shri Sai Baba temple has been opened for the *darshan* from November 16, 2020, *Deepavali Pratipada*. The *darshan* facility in the temple being in a limited form, in the wake of the COVID-19 pandemic, 15,000 devout-devotees can be allowed the *darshan*. The Sansthan administration has been repeatedly trying to make it known through press and social media, television, newspapers, through public displays, news that because of this all devout-devotees while coming for Shri Sai Baba's *darshan* will not be inconvenienced, if they come with prior planning and online registration (paid and free) on the Sansthan's website online.sai.org.in

Yet, even after this appeal of the Sansthan, it is observed that due to the huge crowding of the devout-devotees, especially on Thursdays, Saturdays, Sundays and on other festival days or holidays, the *darshan* administration is stressed beyond its capacity. Presently, in the wake of the said COVID-19 and similarly under the National Disaster Prevention 2005 and Epidemic Control Act, 1897, the state government and the district judicial magistrate have announced restrictions. Additionally, a new Strain of COVID-19 has emerged from England. Devout-devotees come to Shirdi from all over the country and the world for the *darshan* of Shri Sai Baba. For this, as a precautionary measure from Thursday, January 14, 2021 till the government relaxes the restrictions, having earnestly

Shirdi News
❊ Public Relations Officer ❊
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
- Translated from Marathi into English by
Vishwarath Nayar
E-mail : vishwarathnayar@gmail.com

decided to keep control on the crowding by devout-devotees and their numbers, the Sansthan administration has taken the following decisions.

Decisions

❍ It is mandatory for devout-devotees to come to the Shri Sai Baba temple of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi for the *darshan* every Thursday, Saturday/Sunday, as also on other festival days and holidays after going to the website online.sai.org.in and reserving the paid and free *darshan* pass/*aarati* pass. The Sansthan administration will be unable to allow the *darshan* without the reservation pass.

❍ In order to control the huge crowding of devout-devotees on the said Thursdays, Saturdays/Sundays and holidays and festival days, the pass distribution centres at the Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi will be kept closed.

❍ Even the number of *palkhis* (palanquins) on foot is increasing astoundingly. For this reason, all the *palkhi mandals* too should refrain 100% from bringing *palkhis* to Shirdi. The other restrictions of COVID-19 will stay as it is. All devout-devotees are requested to note these and co-operate with the Sansthan administration.

Kanhuraj Bagate (IAS)
Chief Executive Officer,
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

❍❍❍

Appeal to Avoid Being Cheated –

Sai devotees should obtain *darshan* passes for the *darshan* only from the official website of the Sansthan and the *darshan* pass distribution counters, for them to avoid being cheated. Do not take *darshan* passes from other private individuals or websites. It is not right to take passes like this, it is invalid too. The free passes and online passes have the devotees' identity card and photograph. Hence you cannot be cheated. The Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi has appealed to give information of any such agent they come across to the control room mentioned below and similarly also on the helpline.

The Shri Sai Baba *Samadhi* temple has been opened for the *darshan* of Sai devotees on certain terms/conditions. Entry to the temple for the *darshan* is given to a specified number only due to the Corona-virus crisis. Sai devotees can reserve the online *darshan* passes for the *darshan* of Shri Sai Baba on the website : online.sai.org.in. Many Sai devotees come to Shirdi without taking the passes online. Such Sai devotees should take *darshan* passes offline and enter the temple. The offline *darshan* passes being available beside the entry gate no. 2 at Shri Ram Parking, Sansthan's Saiashram 1, Shri Sai Baba Bhaktaniwassthan (500 rooms), Dwaravati Bhaktaniwassthan and Shirdi bus depot, Sai devotees should obtain the offline *darshan* passes from theses *darshan* pass distribution counters only. Similarly, the paid *darshan* passes should also be obtained from the pass distribution counter of the public relations department beside the *darshan* line of entry gate no.1.

For complete information on the stay, meals, medical services, donations and *darshan* and others and to avoid being cheated, Sai devotees before coming to Shirdi and after arrival can contact the Sansthan's helpline mobile numbers (0)7588374469/7588373189/7588375204, control room mobile numbers (0)7588371245/7588372254 and WhatsApp no. (0)9403825314. Also visit the Sansthan's official website : www.sai.org.in

❍❍❍

Corona Vaccination Commences –

The services provided at the COVID centre as a measure to contain the spread of the Corona-virus by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi - run Shri Sai Baba Hospital and Shri Sainath Hospital being praise-worthy, this legacy of service to the patients will continue further incessantly, stated Sri Kanhuraj Bagate, Chief Executive Officer of the Sansthan on the occasion of the inaugural programme of the Corona vaccination.

The inaugural programme of the Corona vaccination was held at the Sai Dharmashala of the Shri Sai Baba Sansthan on Thursday, January 28, 2021. The Sansthan's Deputy Chief Executive Officer, Sri Ravindra Thakare, Prant Officer, Sri Govind Shinde, Taluka Medical Officer, Dr. Pramod Maske, the Sansthan's Administrative Officers, Dr. Akash Kisave and Sri Dilip Ugale, Chief Engineer, Sri Raghunath Aher, Medical Director of Shri Sai Baba Hospital, Dr. Pritam Vadgave, Medical Superintendent of Shri Sainath Hospital, Dr. Maithili Pitambare, Dr. Vijay Narode, nurses and employees were present on the occasion.

Congratulating the Hospital's Medical Officers, nurses, ward boys and sanitation workers for the service provided at the

Sansthan's Corona centre, the Chief Executive Officer of the Sansthan, Sri Kanhuraj Bagate expressed his feeling on the occasion that the legacy of serving the patients by the hospital will continue thus, henceforth too. He stated on the occasion that 'though the commencement of vaccination is a matter of cheer, it is our responsibility to ensure, in the period ahead, to wear masks, continue the use of sanitizers and maintain social distancing'.

At the programme's outset, Dr. Maithili Pitambare, Medical Superintendent of the Shri Sainath Hospital, in her introductory address outlining the measures undertaken by the Sansthan to contain the spread

of the Corona-virus, informed that over 4450 patients availed the benefit of the Sansthan's Corona centre. The COVID warriors, who worked at the Shri Sai Baba and Shri Sainath Hospitals and the COVID centre during the COVID period will be administered the Covishield vaccination to protect them from the Corona-virus. She stated that these would include the doctors, nurses, ward-boys, *ayas*, ambulance drivers and sanitation workers.

❍❍❍

Free Hearing-aid Distribution Camp

750 patients participated and 490 patients were given free hearing aid at the free hearing aid distribution camp organised at the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi - run Shri Sainath Hospital in co-operation with New Sound Hearing Aid Pvt. Ltd., Delhi, from January 30 to January 31, 2021.

Many patients in the rural areas are deprived of buying modern hearing aid machines, due to the present cost inflation and lack of information. For the benefit of such patients a free hearing aid distribution camp to the needy after conducting a free (audiometry) check-up of the ears of the hearing-challenged patients was organised at the Shri Sainath Hospital in co-operation with New Sound Hearing Aid Pvt. Ltd., Delhi. Noteworthily, apart from Shirdi, patients from Nanded, Beed, Nasik, Aurangabad, Amaravati districts, as also Madhya Pradesh state too had registered their name for the camp. In this the audiometry test was done of a total of 750 patients. Of this, 490 patients requiring the hearing aid were given it free.

The Administrative Officer of the Sansthan, Dr. Akash Kisave, Medical Director of Shri Sai Baba Hospital, Dr. Pritam Vadgave, Medical Superintendent of Shri Sainath Hospital, Dr. Maithili Pitambare, Medical Officers, Dr. Shobhna Kolhe, Dr. Amol Joshi, Dr. Yogesh Gethe and Dr. Shirish Shelke, as also the male and female nurses and employees under the guidance of the Chief Executive Officer, Sri Kanhuraj Bagate and the Deputy Chief Executive Officer, Sri Ravindra Thakare took special efforts for the successful conduct of this camp.

❍❍❍

The Mahindra Udyog Group donated a THAR series vehicle costing Rs. 8,34,000/- to the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Sri Vijay Nakara, C.E.O. of the Mahindra & Mahindra Udyog Group handed over the key of the said vehicle to Sri Ravindra Thakare, Chief Executive Officer in-charge of the Sansthan, on the occasion. The ritual worship of this vehicle was performed by Sri Ravindra Thakare, Chief Executive Officer in-charge of the Sansthan and Sri Vijay Nakara, C.E.O. of the Mahindra & Mahindra Udyog Group.

Sri Pradeep Deshmukh, Chief of the Nasik region of the Mahindra & Mahindra Udyog Group, Sri J. S. Prasad, Dr. Akash Kisave and Sri Dilip Ugale, Administrative Officers of the Sansthan, Sri Prakash Kshirsagar, Chief of the Vehicle department and Sri Ramesh Choudhary, Chief of the Temple department were present on the occasion.

The Mahindra & Mahindra Udyog Group had earlier donated such 14 vehicles of various series – Voyager, Bolero, Scorpio, Camper, Logan, Xylo, Maximo, Yuvraj (tractor), XUV 500, XUV 300 and Marazo.

❍❍❍

Function of Shri Sai's *Palkhi* Resumes As Before…

After the function of Shri Sai's *Palkhi* (Palanquin) at Shirdi, the place of the faith of crores of Sai devotees, was started as before, after 10 full months of lockdown, on the night of Thursday, February 4, 2021, Sai Sansthan's Sri Sonyabapu Bankar, Sri Kailas Dange, Sri Ganesh Kawle and Sri Rakesh Thakare, these four became the first to have the honour of the *Palkhi*. This phenomenal *Palkhi* function was greeted by Sai devotees with the loud chant of Sai's Name.

In the meantime, last year in the wake of the Corona pandemic, the doors of the

Sai temple, the international pilgrimage centre, was closed on March 17, 2020. Though the world acclaimed Sai temple's doors were closed, yet the Sai Sansthan continued performing the worship-offerings of Sai Baba daily during the Corona period. Every Thursday the Sai *Palkhi* function that was started during Baba's manifestation,

from Dwarkamai to *Chavadi*, was stopped by the Sansthan administration, following the COVID norms. After the severity of Corona in the state began waning, the state government relaxed the curfew in phases, after full eight months the doors of the temple of Sai Baba, the propagator of the message of *Shraddha* (Faith) and *Saburi* (Patience), were opened for the *darshan* of the devout-devotees. The *darshan*

arrangements in the temple were made as per the COVID rules. Appeals were made to the Chief Minister by the villagers of Shirdi and also by Sai devotees to commence the Sai *Palkhi* function. The villagers persisted with their demand to start the *Palkhi* function. Accordingly, with the mediation of the legislator, Sri Radhakrishna Vikhe Patil, ultimately on Thursday, February 4, 2021 around 9.30 p.m., Sai Baba's *Palkhi* function resumed as before to the fanfare of the sounding of cymbals-drums. The *Palkhi* function was held in the presence of just fifteen to twenty employees of the Sansthan following the COVID rules. Heavy *bandobast* (arrangement) was kept in place on the occasion. Security personnel of the Sansthan and similarly the police were deployed. Barricading was done on all four sides. The devout-devotees expressed a feeling of boundless fulfilment by the villagers and the innumerable Sai devotees, on getting to see the holy *Padukas* (footwear) and *satka* (baton) of Sai Baba in the treat to the eyes *Palkhi* function after ten months.

❍❍❍

DECLARATION

Statement of ownership and other particulars about bi-monthly Shri Sai Leela to be published in the first issue of every year after last day of February.

1.	Place of Publication	:	Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014.
2.	Periodicity of its Publication	:	Bi-monthly
3.	Printer's Name	:	Chief Executive Officer
4.	Nationality	:	Indian
5.	Address	:	Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014.
6.	Publisher's Name	:	Chief Executive Officer
7.	Nationality	:	Indian
8.	Address	:	Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014.
9.	Editor's Name	:	Chief Executive Officer
10.	Nationality	:	Indian
11.	Address	:	Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014.
12.	Name and Address of individuals who own the News-paper and Partners or Shareholders holding more than one percent of the total capital	:	Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi (Charitable and Religious Institution) P. O. Shirdi, Dist. Ahmednagar.

The Chief Executive Officer, hereby declares that the particulars given above the true to the best of his knowledge and belief.

Chief Executive Officer,
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
(Signature of the Publisher)

श्री साईं बाबा एक दिन मस्जिद में और दूसरे दिन चावड़ी में विश्राम किया करते थे। यह कार्यक्रम उनकी महासमाधि पर्यन्त चालू रहा। भक्तों ने चावड़ी में नियमित रूप से उनका पूजन-अर्चन १० दिसम्बर, सन् १९०९ से आरम्भ कर दिया था। चावड़ी समारोह का दृश्य इतना मनमोहक था कि देखने वाले ठिठक-ठिठक कर रह जाते थे, और अपनी सुध-बुध भूल यही आकांक्षा करते थे कि यह दृश्य कभी हमारी आँखों से ओझल न हो।...

(पृष्ठ १५ से)

दर्शन के लिए तैयार हुए। पहले तो बाबा उन पर क्रोधित हुए। परन्तु, धीरे-धीरे उन्हें विश्वास हो गया कि साईं ईश्वरावतार हैं। उनका अंत काल नज़दीक आया, तो उन्हें धार्मिक पाठ सुनाया गया। अंतिम क्षणों में उन्हें बाबा का पादतीर्थ दिया गया। इस तरह तात्यासाहेब ने शिर्डी में मुक्ति पाई।

जब मेघा का देहांत हुआ, तब बाबा ने उसके मृत शरीर पर फूल बरसाये। दाह-संस्कार के बाद बाबा की भी आँखों से आँसू छलक पड़े। बाबा ने कहा कि यह मेरा सच्चा भक्त था।

अज्ञात पीड़ा से परेशान एक बाघ को जब बाबा के सामने लाया गया, तब जैसे ही बाघ मस्जिद की सीढ़ियों के पास पहुँचा और बाबा के तेजोमय स्वरूप का दर्शन कर पीछे हटा... गर्दन झुका दी... दोनों की दृष्टि आपस में एक हुई। बाघ ने अपनी पूँछ तीन बार ज़मीन पर पटकी, जैसे कि वह बाबा को नमन कर रहा हो, तत्पश्चात् उसने भी बाबा के चरणों में मुक्ति पा ली।

बाबा का एक और विलक्षण गुण था, वह था - **कामदं** - कामना - मनोकामना की पूर्ति करना। श्री साईं सत् चरित में ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनके द्वारा बताया गया है कि बाबा ने अपने भक्तों की कामनाओं को किस तरह पूर्ण किया। बिना शक्कर की चाय पीने वाले चोलकर जब अपना संकल्प पूर्ण करने गये, तब उनका आतिथ्य करने वाले बापूसाहेब को बाबा ने कहा कि अपने मेहमान को चाय के प्याले में अच्छी तरह शक्कर मिला कर देना। चोलकर यह सुन कर दंग रह गये! बाबा ने उन्हें बताया कि वे शक्कर छोड़ने के गुप्त निश्चय से परिचित हैं। चोलकर का अल्प संकल्प पूर्ण कर बाबा ने अपने सर्वव्यापी स्वरूप का परिचय दिया। श्री साईं सत् चरित के पन्ने-पन्ने पर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने के उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं।

बाबा अयोनिज थे। बाबा पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, हर मानव में विराजमान हैं। समाधि मंदिर में बाबा आज भी वर्तमान हैं; केवल संगेमरमर की मूर्ति नहीं है। आवाज़ देकर देखो! उन्हें पुकार कर देखो!! तत्क्षण बाबा दौड़े आयेंगे।

जब से साईं का साथ पाया है, तब से जीवन में एक नया मोड़ आया है। ना सुख का, ना दुख का - कोई एहसास नहीं है। पूरी ज़िंदगी अपनी इच्छाओं - कामनाओं को पूर्ण करने में गुज़री। बाबा के चरणों में आकर अब तो कोई इच्छा ही नहीं रही। बाबा को देखना, पूजना, सराहना, पठना और उनको ही सुनने की चाह बनी रहती है।

मेरे प्यारे साईं भक्तों, आप भी साईमय जीवन जी कर अपना ध्येय पा लो! मैंने तो बाबा के चरण-कमलों में अपने आप को अर्पण कर दिया है। आप भी अपना आप साईं को अर्पण करके यही अनुभव कीजिए - **शान्तिदं - मुक्तिदं - कामदं - कारणं।**

- विनय घासवाला
१०/३०२, लाभ रेसिडन्सी, अटलदरा,
वडोदरा - ३९० ०१२, गुजरात.
संचार ध्वनि : (०) ९९९८९९०५६४

On the occasion of MAHASHIVRATRI

RNI Regd. No.
MAH/BIL/2000/8048

SHRI SAI LEELA

Date : 15th April 2021

KUNKESHWAR MANDIR (At Post Kunkeshwar, Tal. Devgad, Dist. Sindhudurg, Maharashtra State)

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था (शिर्डी) के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा गणेश आर्ट प्रिंटर्स, एम.आर. ट्रेड सेंटर, शॉप नं. ७, वाडिया पार्क, अहमदनगर – ४१४ ००१ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आम्बेडकर रोड़, दादर, मुम्बई – ४०० ०१४ में प्रकाशित।
* सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी